राजनीति प्रणोदित चरित्रहनन-प्रयासरत
चरित्र पर आधारित सामाजिक नाटक

बदलैत समाज

लेखक :
आनन्द कुमार झा

प्रकाशक :
श्री अभयकान्त झा
मेंहथ, झंझारपुर, मधुबनी

प्रकाशक :
श्री अभयकान्त झा
ग्रा० + पो० : मेंहथ
भाया : झंझारपुर, मधुबनी

•

•

प्रकाशन तिथि : २००२ ई०

•

प्रथम संस्करण : ११०० प्रति

•

मूल्य :

•

मुद्रक :
देवीशंकर मिश्र
अरुण प्रिंटिंग प्रेस
९-बी, सिकदरपाड़ा स्ट्रीट,
कोलकाता - ७०० ००७
दूरभाष : २३८-४२०१

BADALAIT SAMAJ
MAITHILI DRAMA by ANAND KUMAR JHA

मोनक बात–

सुधीपाठक अपन कृतिक ई तेसर सोपान "बदलैत समाज" अपनेक हाथ मे थमबैत बहुत हर्ष भऽ रहल अछि। एहि शुभवेला मे स्मरण कए कोटि-कोटि प्रणाम करैत छी अपन उच्च कोटिक पाठक लोकनि कें स्तरीय कलाकार गण कें संगहि हजार कें हजारक संख्या मे जुटनिहार दर्शक कें जे हमर रचना कें माथ आँखि पर बसा स्वीकार करैत छथि।

कोनो पोथी नाममात्र छपि गेला सँ सफल हेबाक दावा नहि कऽ सकैत अछि। पोथी छपल, ओकरा सर्वसाधारण पसीन केलक लोकक मन-मानस मे जा बसल तहन ओ पोथी सफल मानल जायत। "टाकाक मोल" आ "कलह" आहाँ सबहक हृदय के छूलक बस हम अपना कें धन्य बुझैत छी।

जहाँ तक मैथिली नाटकक संख्या के बारे मे बात करब तऽ एखनहु आंगुर पर गनल जा सकत। एहना स्थिति मे मैथिली रंग-मंच कें बचाकऽ राखक लेल नव नाटकक निर्माण आ पोथी रूप पसारनाइ नवका पीढ़ीक कर्तव्य बनि जाइत अछि। प्रस्तुत पोथी बदलैत समाज मे स्वार्थी समाज सेवीक लोलुपता, लाठीक बल पर कुर्सी कायम राखक परम्परा, स्त्रीरुदन, स्त्रीअधिकारक दुहन कऽ अपन बर्चस्वताक झंडा कें उच्च करब तऽ दोसर पक्ष वर्तमान समाजक नवका लोक एहि प्रवृत्ति कें समाप्त करैक प्रण कऽ अपन स्वर गुंजित करब अछि। बीच मे पीसाइत अछि घूरन बाबूक अभागलि पुतोहु जे विवाहक किछुए दिनक बाद अपन बीमारी सँ ग्रसित पति के हरा लैत अछि। अपनहि घर मे आन भऽ रहैत अछि। मुदा ओहो जीतैत अछि जखन घोघ तऽर सँ सुन्नर मुँह निकालैत अपन अधिकारक लेल बाहर निकलैत अछि। सजा भेटै छै अपराधी कें। विशेष कथाक जानकारी लेल पढ़ू, देखू आ मंचन करू मैथिली नाटक "बदलैत समाज"।

एहि नाटकक पोथीरूप होमए तक अनेक विद्वान लोकनिक आशीर्वाद पौलहुँ। सब सँ पहिने स्मरण करऽ चाहैत छी पूजनीय स्व० प्रभाषजीकें जिनक आशीर्वाद पाबि हम अपन लेखनी शुरू केने छलौं। निश्चितरूपें

हमर सफलता पर स्वर्गलोक मे जरूर प्रसन्न होइत हेताह। सब समय अपन आशीर्वचन सँ हमर मनोबल शक्त केने रहैत छथि डा० श्री जयकान्त मिश्र, श्री वीरेन्द्र मल्लिक, श्री ताराकान्त झा तथा श्री दयानाथ झाजी, जिनक प्रति हृदय सँ कृतज्ञ छियनि। हम चर्चा करए चाहैत छी श्री लक्ष्मण झा 'सागर', श्री तारानन्द झा 'तरुण' आ श्री रमेशजीक जे निरन्तर भेंट भेला पर हो वा पत्र द्वारा हमरा अपना रचनाक प्रति सचेत आ चिन्तनशील बनबैत रहैत छथि। प्रख्यात निर्देशक श्री कुणाल जी, श्री शम्भूनाथ मिश्र जीक प्रति आभार व्यक्त करैत छी जे समय-समय पर आधुनिक रंग मंच सँ परिचय करबैत रहैत छथि।

''बदलैत समाज'' नाटकक प्रथम मंचनक भार सहि कोकिल मंच नवलेखकक प्रति जे उदारता देखेलक से अविस्मरणीय रहत। नाटकक सफलताक सब सँ पैघ श्रेय निर्देशक श्री गंगा झाजी कें छन्हि जे अपन मुँहतोर मेहनतिक बल पर एकटा स्तरीय नाटकक पंक्तिमे ''बदलैत समाज'' के ठार करोलथि। अन्त मे बाबूजी आ मायक त्यागक दोहरा ऋणी रहैत अपन दूनू छोट भाई त्रिलोक आ अमरेन्द्रक सचेष्टताक बड़ाई करए चाहैत छी जकरा मेहनत सँ पोथी आहाँ लोकनिक हाथ पहुँचैत अछि। हम धन्यवाद दैत छी रिंकूकें जे राति हो वा दिन सब समय हमरा सँ पांडुलिपि सुनि नीक बेजायक चर्चाकऽ रचना कें प्रभावशाली बनबैत अछि। बस आब माँ वीणावादिनि कें प्रणाम करैत आग्रह करैत छी जे नवीनतम पोथी ''बदलैत समाज'' कीनू, पढ़ू-पढ़ाऊ संगहि मंचन करू आ लिखि पठाऊ अपन विचार। तऽ ई छल हमर मोनक बात, अपन मोनक बात सँ अवगत कराबय मे देरी जुनि करू। हमरा प्रतीक्षा अछि। मंचन केनिहार मंच कें हम अवगत करबऽ चाहैत छी जे एहन कोनो बात नहि छैक जे हम मंचन स्थल पर नहि जाइत छी। जतए सँ पहिल समाद आयल ओहि ठाम पहिने जाइत छी।

एहि संग आशा रखैत छी जे आहाँ सबहक स्नेह, प्रेम आ आशीर्वाद भेटैत रहत।

– आनन्द कुमार झा

नाटक नीक लागल

– निर्देशक

संस्कृति आ सभ्यताक उत्कृष्ट अंश नाटक थिक। समाजक मौलिक आदर्श आ मूल्य कें जीवंत प्रस्तुत करैत अछि नाटक। अन्य कोनो कलात्मक वा सर्जनात्मक अभिव्यक्ति मे नाटक सबसँ बेशी रचनात्मक अभिव्यक्ति करबाक शक्ति रखैत अछि। ई एहन माध्यम अछि जाहि मे मनोरंजनक अंश अन्य कलाक अपेक्षा बेशी अछि। जीवनक नानाविध अनुभूति कें रंग-मंच पर प्रस्तुत करबाक क्षमता नाटके टा मे छैक जाहि मे कार्य, व्यापार, काव्य आ भाव संयुक्त छैक, एकरा ध्वनि एवं गति मे काव्य छैक संगे भावदशा मे आवेग। शारीरिक एवं मानसिक प्रभाव प्रदर्शन करबाक क्षमता छैक। यद्यपि कला आ संस्कृति एखन बाजारक स्वरूप लऽ लेलक अछि तथापि उद्देश्य आ कर्म मे ईमानदारी रहला सँ वर्तमान समयक दूरदर्शन आ सिनेमाक अपसंस्कृतिक सोझाँ रंग-मंच अपन लोकप्रियता बना कऽ राखि सकैत अछि।



रंग-मंचक लेल तीनटा प्रमुख समस्या छैक जे सब भाषा मे छैक। लेखक, निर्देशक आ कलाकार आ एकर समाधान छै रंग-मंच। रंग-मंच बढ़त तऽ नाट्यकार नाटक लिखताह, निर्देशकक प्रयोजन हैत तऽ निर्देशक बढ़ताह आ संगे कलाकारक शौख पूरा हेतनि। अइ सभक लेल प्रयोजन छैक निःस्वार्थ कार्य आ कला प्रेम।

अइ बीच आनन्दकुमारजी बहुत किछु लिखिकऽ एकत्रित करैत रहलाह। कथा, उपन्यास आ नाटक। हम हिनकर लिखल बेशी नाटक पढ़ने छियनि। काटर विरोधी नाटक 'टाकाक मोल' पारिवारिक समस्या 'कलह', 'नवकनियाँक दुराग्रह', 'धधाइत कनियाँक लहास' आ ई पोथी 'बदलैत समाज' जे अपने लोकनिक हाथ मे अछि। संगे अप्रकाशित नाटक हठात्

परिवर्तन जकर सेनाक वरिष्ठ नायकक कुपुत्रक हृदय मे सुपुत्र हएबाक परिर्वतन। एहि तरहें लेखकक जाहि आत्म विश्वास सँ धाराप्रवाह लेखनी चलै छनि से निश्चय साहित्यिक क्षेत्र मे नीक प्रवेश मानल जेतन्हि।

''बदलैत समाज'' नाटकक मंचन करबा सँ पूर्व कतिपय विन्दु पर निर्देशकक मतें परिवर्तनक हेतु लेखक पूर्वाग्रह सँ ग्रस्त नहि रहला जे हुनकर उदारता आ सहृदयताक प्रमाण अछि। नाटक जे लेखक लिखलनि से ताधरि नाटक नहि भेल जाधरि ओकर एकटा मंचन नहि हो। तैं कोनो नाटक मंचन भेलोत्तरे मंचोपयोगी प्रमाण पाबि सकैत अछि से अइ नाटक के प्रमाण भेटलै।

''कोकिल मंच'', कोलकाता अपन वार्षिकोत्सव मे दिनांक २७/१/०२ कऽ महाजाति सदन प्रेक्षागृह मे एकर मंचन कएलक आ महानगरक दर्शकक बीच सम्पूर्ण नाटक थपड़ी सँ गनगनाइत रहल।

नाटकक मूल वस्तु होइछै कथ्य। ताहि मे लेखक विषय के बान्हि कऽ रखने छथि। रुग्ण बेटाक विवाह लऽ बेहाल बाप, रुग्ण पतिक जीवन हेतु पत्नीक समर्पण, पुतोहु पर सासुक लांक्षणा मित्रताक कठिन परीक्षा आ गौंआ-घरुआक राजनीति संगे परनिन्दाक हहास सँ युक्त नाटक एकदिश समाजक दुश्चरित्र व्यक्ति पर प्रहार करैत अछि तऽ दोसर दिश नायिकाक मौन विद्रोह नारी चरित्र के आदर्श सिद्ध करैछ। प्रत्येक पात्रक कार्य कथ्यक अनुरूप अछि।

नाटकक सफलता निर्देशक आ कलाकारक श्रम पर निर्भर करैत अछि। जतेक गम्भीरता सँ एकर निर्देशकीय पक्ष पर विचार कएल जायत तते कलाकार सँ अपेक्षा राखल जा सकैत अछि। नाटकक प्रथमार्द्ध जहिना गम्भीर अछि तहिना उत्तरार्द्ध जटिल एवं विविधता सँ भरल। तें दूनू भागक तारतम्य एवं साम्यता रखैत मनोरंजनक हेतु गीतक समावेश कएल जा सकैछ।

सम्पूर्ण रूपेण नाटक आधुनिक समाजक गुण-दोष पर विचार करबाक अवसर दैत अछि। अन्तमे लेखक कें धन्यवाद जे अपन समय साहित्यिक सृजन मे लगा समाजक उपकार करैत छथि।

— गंगा झा,
कोकिल मंच, कलकत्ता।
परजुआरि (डीह टोल); मधुबनी।

अगबारि–

प्रस्तुत नाटक 'बदलैत समाज' मे नाट्यकार श्री आनन्दकुमार वर्तमान सामाजिक परिवेश कें उजागर करबाक प्रयास केलन्हि अछि। साधारणत: हमरा लोकनि रोग-ग्रसित व्यक्तिक आत्मबल अक्षुण्ण रखबा लेल रोगी कें ओकर रोग सँ अनभिज्ञ रखै छी। परंच रोगीक अभिभावको कें अनभिज्ञ रखनाइ केतेक भयानक सिद्ध भऽ सकै अछि से अवधेशक मित्र दीपक अवधेशक बीमारी कें गोपनीय राखि सिद्ध कए देलन्हि।

हमरा लोकनिक समाज मे अभिभावक लोकनि अपन बालकक विवाह ओकरा सुख सँ वेशी अपना सुख कें ध्यान मे राखि करै छथि। एकरे परिणाम थिक शोभाक वैधव्य।

शासन हेतु गणतांत्रिक पद्धति सभ सँ नीक पद्धति। एहि पद्धति मे निर्वाचनक महत्व सब सँ वेशी। एहि निर्वाचन मे हमरा लोकनि कोन स्तर तक पहुँचि सकै छी से भजेन्द्र मुखिया सिद्ध कएलन्हि। एतद्रिक्त अपन स्वार्थवश निर्वाचन प्रकरण मे हमरा लोकनि एतेक दूर धरि नीचा उतरि सकै छी जाहि ठाम रक्तक सम्बन्धो बिसरब कठिन नहि होइछ। एहने चरित्रक उजागर मनटुन कएलन्हि। एकर कल्पना मात्र सँ देह सिहरि जाइछ। ओ अपना सरबेटी शोभाक चरित्रहनन मे नेताजी कें संग दए अपना कें कलुषित बनौलन्हि।

नारदोक स्थान समाज मे अछि जकर उपयोग हमरा लोकनि अपन स्वार्थ सिद्धि मे करै छी। एहने चरित्र कें उजागर कएलन्हि शिखरदेव-वरोक माए एवं कनियोक माए। श्राद्ध एवं विवाह दुनू मे पात ओछाएब मुख्य कार्य।

एकटा चरित्र छथि वीजेन्द्र जे बिना ढाक-ढोल कें आगू आबि शोभाक संग विवाहक प्रस्ताव द्वारा रूढ़िवादी परम्परा सँ कात भए नव दिशाक संकेत देलन्हि। एहि सँ ''बदलैत समाज'' नाटकक सार्थकता सिद्ध होइछ।

तरुण लेखक श्री आनन्द कुमार ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण भावधारा एवं गमैया बोलचालक भाषाक प्रयोग कए दर्शक एवं पाठक वृन्द कें बान्हि कऽ रखबाक प्रयास कएलन्हि अछि। हुनका साधुवादक संग आशीर्वाद। दीर्घायु हेबाक मंगल कामना।

स्मरण राखथि– *रसरी आवत जात ते सिल पर होत निसान।*

लेखनी चलैत रहले सन्ता अक्षर-प्रसून फोका मखान जकाँ फूटैत रहत।

किशोरीकान्त मिश्र, *पूर्व अध्यक्ष*
मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता।

गोपीपट्टी ढढ़िया,
कमतौल, दड़िभंगा।

कोकिल मंच

७, रमेश दत्त स्ट्रीट, कोलकाता – ६

द्वारा

प्रथम मंचन : दिनांक : २७ जनवरी, ०२

स्थानः महाजाति सदन, कोलकाता

पात्र–परिचय

पुरुष–पात्र

पात्र	सम्बन्ध	उम्र	अभिनायक
घूरन	अवधेशक पिता	६० वर्ष	आनन्दकिशोर ठाकुर
भजेन्द्र	दीपकक पिता	६० वर्ष	हृदयकान्त झा
अवधेश	बीमार युवक	२५ वर्ष	विश्वनाथ मिश्र
दीपक	आदर्श युवक	२५ वर्ष	सुधाचन्द्र झा
मनटुन	ग्रामीण (कुटिल)	५० वर्ष	उदयकान्त मिश्र
शिखर	ग्रामीण (मुँहलगुआ)	३५ वर्ष	दुर्योधन मिश्र
नेताजी	नेता	५० वर्ष	जयवीर झा
सोमेन	चमचा	३५ वर्ष	मिथिलेश झा
वीजेन्द्र	ग्रामीण सच्चरित्र युवक	३० वर्ष	राजीव कर्ण
इन्सपेक्टर	पुलिस	३० वर्ष	जुगनू प्रसाद
अभिषेक	अवधेशक भाई	१२ वर्ष	देवेन्द्र झा

स्त्री–पात्र

शोभा	अवधेशक पत्नी	१८ वर्ष	मौसमी दास
कौशल्या	अवधेशक माय	५० वर्ष	दीप्ति चटर्जी

● गीत : गंगा झा ● आलोक : भानू विश्वास

● पार्श्वसंगीत : फेलू दास ● मंच एवं रूप सज्जा : स्वपन राय

निर्देशन : गंगा झा

अंक : पहिल

दृश्य : पहिल

(एकटा पुरान मकान। आँगन सँ घर मे अयबाक केबार एवं बाहर सँ घर मे प्रवेश करबाक द्वार। एकटा पलंग आ कुर्सी-टेबुल। टेबुल पर दवाइक शीशी, गोटी इत्यादि राखल। देवाल पर भगवानक फोटो टांगल।

प्रातःकालक समय। पलंग पर सँ अवधेश उठबाक उपक्रम करैत अछि। नेपथ्य मे प्रातःकालीन बाँसुरीक स्वर सुनाइ पड़ैत अछि। शोभा केरा पात पर प्रसाद नेने आँगन सँ अबैत अछि। आ टेबुल पर प्रसाद राखि दैत अछि। शोभा सहयोगे अवधेश उठि कऽ आङन दिश जाइत अछि। शोभा ओछाओन झाड़ि सरिया दैत अछि। अवधेश मुँह पोछइत अबैत अछि आ पलंग पर बैसि जाइत अछि। शोभा दुनु हाथ सँ आँचर लए अवधेश कें गोर लगैत अछि। अवधेश शोभा कें उठा लैत अछि। शोभा अवधेश कें प्रसाद खुआ दैत अछि। अवधेश एकटक शोभा दिश देखैत अछि।)

गीत : सम्मावित

शोभा– की देखै छी ?

अवधेश– देखै छी सोझा मे बैइसल एकटा देवी कें जे हमरा हाथ मे महादेवक प्रसाद देलक अछि।

शोभा– तर्कक सीढ़ी जुनि ठाढ़ करू । पहिने प्रसाद खा लिअऽ तहन दवाइ खा लेब। फेर स्नान ध्यान कऽ लिअऽ तावत् हम गरम–गरम जलखै बना कऽ लबैत छी।

अवधेश– *(प्रसाद खा लैत अछि)* आहाँक आज्ञाक पालन कएल। अच्छा, कहू तऽ। प्रत्येक दिन अन्हारे मे आहाँ मन्दिर जाकऽ पूजा करैत छी। हमरा प्रसाद खुअवैत छी। आहाँकेँ विश्वास अछि जे दवाइ सँ वेशी लाभ हमरा प्रसाद करत ?

शोभा– वेशी आ कम लाभक बात नहि छै। दवाइ तऽ रोग निवारक होइते छै मुदा श्रद्धा आ विश्वास सँ आत्मशक्ति

बढ़ैत छै। आत्मबल रोग निवारण मे सहायक होइ छै। तैं भगवतीक प्रसाद कें सर्वव्याधि हरण कहल गेलैयै।

अवधेश– *(गम्भीर)* सर्वव्याधि हरण नहि शोभा। जँ से होइतै तऽ हम दिन प्रतिदिन रुग्ण नहि भेल जइतौं। आहाँ देखि रहल छी हमरा स्वास्थ्यक उन्नति नहि अवनति भऽ रहल अछि। हमरा विश्वास नहि भऽ रहल अछि जे हम कहियो स्वस्थ हएब।

शोभा– केहन अशुभ बात बजैत छी। आहाँ ठीक हएब। जरूर ठीक हएब।

अवधेश– नहि शोभा। हमरा संगे विडम्बना भेलए। विवाह सँ पूर्व जहन डाक्टर लग सँ घूरैत छलहुँ। लाख पूछलो पर ओ बनाबटी हँसी हँसि कऽ गप्प कें उड़ा दैत छल।

शोभा– आहाँ अनेरे मोन कें चिन्ता दिश दौड़ा रहल छी। भगवान कल्याण करबे करथिन्ह।

अवधेश– भगवान कें कल्याण करबाक रहितनि तऽ जरूरे कऽ दितथिन्ह, मुदा---*(गम्भीर)* हम अपना रोगक इतिहास दिश जहन तकै छी तऽ अन्हारे अन्हार देखाइत अछि। एतेक दिन सँ इलाजक पश्चातो यदि हमरा मे सुधारक लक्षण नहि तऽ फेर अइ जीवन मे कहियो प्रकाश आओत एकर कोन आश---।

शोभा– *(बीच मे)* प्रकाश आओत । आहाँ एतेक निराशाजनक गप किए बजै छी ?

अवधेश– जतऽ आशाक किरण मिझाइत होइ ततऽ निराशो जन्म लेबे करतै। बाबूजी कें टाकाक प्रयोजन छलनि, तैं हमर विवाह आवश्यक बुझलनि, माए के घर मे पुतहुक प्रयोजन बुझेलनि तैं हमर विवाह लेल अगुताएल

छलीह । आहाँक पिताके बेटी गराक घेघ बुझेलनि तैं कतौ वियाहि देलनि। किओ गोटा हमरा लेल किछु नहि सोचलनि जे हम विवाह करबा योग्य छी कि नहि ?

(कानऽ सन भऽ जाइत)

शोभा– *(अवधेशक नोर पोछइत)* हम आहाँक सेवा मे छी। आहाँ चिन्ता केनाइ छोड़ि दिअ।

(नेपथ्य सँ)

कौशल्या– कनियाँ! ऐ कनियाँ! बौआकें जलखै बिसरि गेलियै ? हम महराजी कुटी जाइ छी, बौआ लए विभूत आनऽ लए। आहाँ एम्हर सम्हारि लिअऽ।

शोभा– इम्हे अबै छी माय। ई जाथु। जल्दी अबिहथि। *(अवधेश सँ)* हमरा जाए दिअ।

अवधेश– *(शोभाक हाथ पकड़ि)* नहि शोभा। हमरा बहुत रास बात कहबाक अछि। माथ सँ लऽ कऽ पैर तक समस्त अंग सुन्न भेल जा रहल अछि। हमर बुद्धि काज नहि कऽ रहल अछि। एहि जीवन सँ मरण हमरा नीक बुझना जाइत अछि।

शोभा– एहन अशुभ बात दोहरा कऽ जुनि बाजब। कखनो हमरा बारे मे सोचे छियै ? हमर की दशा हएत ? आहाँकें किछु नहि हएत। आहाँ ठीक भऽ जाएब। *(कानऽ लगैछ)*

अवधेश– जानि नहि एहन कोन पाप ओहि जन्म मे आहाँ सँ भेल जे हमरा सन रोगी पति भेटल।

शोभा– आहाँ कें पाबि हम अति प्रसन्न छी। आहाँ हमर परमेश्वर छी। आहाँ जल्दी नीरोग भऽ जाएब।

अवधेश– नहि शोभा। हमर आशा केनाइ व्यर्थ। हमर माय-बाप क्षणिक सुखक लेल आहाँक संग घोर अन्याय केलथि।

माय–बापक भावनाक आगाँ हमहूँ विवश भऽ गेलौं। हमरा नहि बूझल छल जे हमर बीमारी ठीकें होमऽ वला नहि अछि। हम अहिना रहि जाएब। जौं जनैत रहितहुँ तऽ विवाह किन्नहुँ नहि करितौं।

शोभा– एना अन्ट सन्ट जुनि बाजू। मोन खराब अछि तकर दवाइ चलिए रहल अछि। बहुत जल्दी स्वस्थ भऽ जाएव।

कौशल्या– *(प्रवेश – ऑचरक खूट सँ एकटा फूल, बेलपात आ विभूत अवधेशक माथ पर दै छथि। घरक चारू कोन्ह मे विभूत फेक दै छथि।)* *(शोभा पर वक्र दृष्टि दैत।)* आहाँ एखन धरि ठाढ़े छी ? कनेको खेयाल नहि जे हम की कहि कऽ गेलौं ? बहिरा करैत जकाँ सुन्न भेल ठाढ़ छी।

शोभा– इएह जाइ छी। *(जाए लगैत अछि)*

कौशल्या– गे दाइ, केहन ढीठपन देखबैऐ हमरा। अलच्छीक पैर जहिया सँ हमरा घर मे पड़ल तहिया सँ हमर बौआ ओछाओन नहि छोड़लक। गे धकड़ी! हमरा बेटा कें खाकऽ डइनपन सीखऽ चाहै छैं ?

शोभा– *(कनैत)* माय एहन बात मुँह सँ नहि निकालथु।

कौशल्या– जौं हमरा बेटा कें किछु भेल तऽ हम तोरा देखा देबौक।

अवधेश– *(उठैत)* माय! चुप रह। हमरा बर्दास्त नहि होइऐ। *(माथ पकड़ि कऽ बैसैत)* ओकर कोन दोष छै ? एकटा निर्दोष के किए अपराधी बनबैत छैं।

(बेहोश होमऽ लगैछ)

कौशल्या– *(कनैत)* की भेलौ बाउ ? यो बाबू – बच्चा सब, हमरा बेटा कें देखू, की भेल यो।

(कौशल्या आ शोभा अवधेश कें सम्हारैत अछि तखने दीपक प्रवेश करैत अछि)

दीपक– चुप करू काकी। एतेक किओ हर–हर, खट–खट करए। कने कम बाजब–कानब से नहि। *(अवधेश कें उठबैत)* अवधेश ! अवधेश !! केहन मोन लगैत अछि ?

अवधेश– ठीक छी! बस ठीक छी। आब हमरा जीवाक भरोस छोड़ू।

दीपक– *(कौशल्या आ शोभा कें कनैत देखि)* बेरा–बेरी ई की शुरू कऽ रहल छी आहाँ सब। कनला सँ जौं रोग ठीक होइतै तऽ सगर गामक लोक कें पैर–दाढ़ी पकड़ि कऽ कनबितहुँ। *(शोभा लग)* आहाँ बुझनुक छी भौजी। प्लीज आहाँ अपन 'पेसेन्स' जुनि हेराउ। परिस्थितिक सामना केनाइ सीखू। आंगन लऽ जा कऽ देह–हाथ पोछि दियौ।

(अवधेश कें पकड़ि कऽ शोभा आंगन लऽ जाइछ।)

(प्रवेश – बाध दिश सँ लोटा नेने घूरन बाबूक प्रवेश। कान पर जनऊ लेपटायल्ल छनि। दीपक आ कौशल्या दिश आश्चर्य सँ देखैत)

घूरन– की बात छै ? बौआ ठीक अछि ने ? *(कियो उतारा नहि दैछ।)*

घूरन– आहाँ सब बजै किए नै छी ?

कौशल्या– एखन मोन बेशी खराप भऽ गेल छलै। आब ठीक छै।

दीपक– घूरन काका! आहाँ सब विवाह के कनियाँ पुतराक खेल बुझलियै। आहाँ सबके निहोरा–पाती कऽ कऽ कहने रही– अवधेशक विवाह एखन नहि करेबै। तकरा बादो आहाँ सब ओकर विवाह करा देलियै। हमरा बातक एक पाइ भेलू नहि–––। हमरा पर आहाँ सब विश्वास नहि केलहुँ।

घूरन– आहाँक बात काटि कऽ विवाह करा देलियै तऽ कोनो अनुचित नहि केलहुँ। विवाह करेनाइ कोनो अन्याय तऽ नहि ?

दीपक– अनुचित आ अन्यायक बात करैत छी। जानि बुझि कऽ आहाँ सब एहन काज केलहुँ जकर प्रायश्चित्त केनाइ आहाँसब वशक बात नहि।

कौशल्या– ऐं रौ दीपक, विवाह करा देलियै ताइ लए तों एना आमिल किए पीने छैं।

दीपक– आहाँ सब ओकर हँसैत खेलाइत जिनगी मे जहर घोरि देलियै। शोभाक एतबे कसूर छैने, जे ओकर अन्हरायल माय–बाप आहाँक बीमार बेटा सँ विवाह करा देलकै। किए अनेरे ओहि बेचारीक माथा दोष दैत छियै ?

कौशल्या– हमरा लागि रहल अछि जेना आइ तों भाँग–ताँग पीब कऽ आयल छें। बेटाक विवाह नहि करबितौं तऽ ओ कि कुमारे रहितए। एहन कुलक्षणी हमरा घर आयल जे हमरा बेटाक दु:ख बढ़ा देलक।

दीपक– अपना भाग्य कें दोष नहि दऽ कऽ अनका बेटी कें कुलक्षणा कहैत छियै से आहाँ कें शोभा नै दै अछि।

घूरन– आहाँक कहबाक अभिप्राय की ? अवधेशक विवाह नहि करबितहुँ ? देखू, हमरा सबकें वयस भेल। हमरा सबकेंअपनहि देखऽ सुनक लेल एकटा मनुखक प्रयोजन अछि। फेर अवधेशक देखभाल के करितै तैं विवाह करा देलियै जे कनियाँ अओथिन्ह तऽ ओकर तकतियान ठीक सँ हेतै। दोसर बात आहाँ सँ चोराओल नहि अछि; अवधेशक दवाइ दारू मे हमर खेतसभ बिका गेल, तकर बादो कर्जा सँ तऽर छलहुँ। कतऽ सँ सधबितहुँ ? तैं ओकर विवाह मे जे काटर भेटल ताइ सँ ऋण–पैंच सधा लेलहुँ। एखनो कतेक दिन धरि दवाइ दारू चलतै से नहि जानि।

दीपक– *(थपड़ी बजाकऽ)* वाह! वाह! घूरन काका! महान विचार अछि आहाँक। केहन उच्च विचार केलियै। बेटाक विवाह मात्र अइ लेल करौलियै जे ओ अभगली आहाँक रोग ग्रसित पाहुन बेटाक सेवा शुश्रुषा बढ़ियाँ जकाँ करत। काटर मे भेटल टाका सँ ऋण–पैंच सधाओल जाएत। आदि–आदि।

घूरन– आर हमरा लग तऽ दोसर कोनो टा उपायो नहि छल।

दीपक– जनैत छी काका। जाधरि एकटा कन्याक विवाह नहि भेल रहैत छै, ओ कतेको सपना कें जोड़ि–जोड़ि कऽ एकटा महल बनौने रहैत अछि। हमर पति एहन हएत, ओहन हएत, लाखो मे एक हएत। आहाँ सब अपना स्वार्थक वास्ते ओकर सपनाक महल ढाहि देलियै। *(आक्रोश मे)* जाउ, मुँह की तकैत छी। जा कऽ पोछि दिऔ ओइ निरीह अबलाक सीउँथक सिन्नुर आ खतम कऽ दिअऽ अइ मिथ्या मानवीय आडम्बर कें।

(अवधेश केबार लग ठाढ़ भऽ जाइत अछि)

कौशल्या– तों हमरे घर मे आबि कऽ हमरे अशुभ बात कहै छैं। केहन दोस तो छिहीं।

दीपक– हम जे कहि रहल छी से एकदम सत्य कहि रहल छी।

कौशल्या– तों हमरा पुतोहु के सिन्नुर मेटबै लए कहलै ? रे निर्लज्जा तों निकलि जो अहि ठाम सँ। आजुक बाद हमरा दुआरि पर पएर नै रखिहें। दोस्तीक नाम पर तों कलंक छै।

दीपक– हँ– हँ– काकी! दोस्तीक नाम पर हम कलंक छी, हमरा पर मिथ्या आरोप चाहे जे लगाबी मुदा सत्य कें नहि झाँपि सकै छी। आवधेश कें तेहन बीमारी भऽ गेल छै जे कहियो नै छुटतै। भगवाने----। *(कानऽ लगैछ)*

कौशल्या– की ?

दीपक– हँ काकी।

घूरन– एहन कोन बीमारी छै जे नहि छुटतै ?

दीपक– हँ काका, अवधेशक रोग छूटऽ वला नहि छै। बुझऽ चाहैत छी ? कहि दैत छी बीमारीक नाम।

(सब चुप भऽ जाइत अछि)

घूरन– चुप कियैक भऽ गेलहुँ , बाजू ने कोन बीमारी छै ?

दीपक– नहि काका, नहि।*(थोड़ेक देर बाद गम्भीर स्वर सँ)* अवधेश कें 'ब्लड कैंसर' छैक।

(नेपथ्य सँ ठनकाक आबाज, सब कियो स्तब्ध! आँखि मे नोर। अवधेश सेहो आँखि सँ नोर पोछैत अछि।)

दीपक– आब कानि कऽ कोनोटा लाभ नहि । आहाँ सभहक अवस्था देखि डाक्टर कहऽ सँ मना केने छल परन्तु आइ आहाँ सब बाजक लेल बाध्य कऽ देलहुँ। *(कल जोड़ि)* अवधेश आ शोभा कें एहि बातक भनक तक नहि लागऽ देबै।

(घूरन बाबू फफकि-फफकि कानए लगै छथि। सब कियो हुनका सम्हारैत अछि)

दीपक– घूरन काका। अवधेशक गनल-गुथल जिनगी मे काँटक सेज ओछाकऽ ओकरा दूनू के कष्ट जुनि पहुँचबियौ।

(अवधेश भाव बद्रलैत प्रवेश करैत अछि। मंच पर लोक अपन नोर पोछि भाव परिवर्तित करक प्रयाश करैत अछि। आ अवधेश कें जिज्ञासा भरल दृष्टि सँ देखैत अछि।)

अवधेश– *(आश्चर्य सँ)* एना आहाँ सब निहारि निहारि कऽ किए देखि रहल छी ? कोनो हम नव एलहुँ। बाबू जी! आहाँक आँखि मे नोर ? की बात छियै ?

घूरन– नहि नहि, हमरा आँखि मे नोर किए रहत।

अवधेश– माय! तोरो आँखि नोरायल बुझाइत छौ ?

कौशल्या– मिरचाइ वला हाथ सँ आँखि पोछा गेल भरिसक।

अवधेश– ओ! आहाँ दुनू गोटा झूठ तऽ ने बजैत छी ?*(दीपक दिश)* हमरा मित्र कें की भेलनि जे एखनो कानि रहल छथि ?

दीपक– हमरा की भेलए जे कानब। एखने मुँह हाथ धोलहुँ अछि भऽ सकै छै सएह जल आँखि पर लपकल होइ जकरा आहाँ नोर बुझै छियै।

अवधेश– हमर आँखि आब धोखा खाए लागल ?

दीपक– आहाँक मोन ठीक अछि तऽ ?

अवधेश– वएह लिअऽ! हमरा नव पर की भऽ गेल जे मोन खराब हएत। हम तऽ एकदम फिट छी। जाउ, डाक्टर कें कहि अबियौ जे ओ ठीक अछि। आब ओकर दबाइ दारूक कोनो आवश्यकता नहि। माय-बाबू भिनसरे भिनसरे एतेक लटुआएल किएक छथि से नहि जानि। देखू मित्र, हमरा आहाँक बीच कोनो खट-पट ने भऽ जाए ?

दीपक– ई दोस्ती मे कुस्तीक निर्णय किए लए रहल छी ?

अवधेश– ई निर्णय किएक नहि लेब यौ ? आहाँ हमरा संगे डाक्टर लग जाइ छी कि, ओतऽ सँ एक ढकी बात आबि माँ-बाबूजी लग उझलऽ लगै छी, घर मे हमर अनुपस्थितिक बढ़ियाँ लाभ उठा लै छी। बाबूजी! दीपक जतेक बात एखन कहने हेता से सबटा हम जनै छी।

घूरन– *(आश्चर्य सँ)* की ? सबटा बुझै छियै ? हमरो सबकें कहू तऽ।

अवधेश– माय ! बजैत-बजैत कंठ सुखा गेल। चाहो ताहो हेतै कि सोझे गप्पे सड़का।

कौशल्या– आहाँकें चाह पीबैक मोन भेलए। हम एखने चाह बना

कऽ लबै छी। आहाँ लेल तऽ हम आकाशक तारा आँगन मे उतारि सकै छी।

अवधेश– माय! नहि – नहि तारा नहि उतारू। सम्भावनाक आधार पर मनुष्य कल्पना करैत अछि । मुदा प्रकृतिक शास्वत नियम कें कियो नहि बदलि सकैत अछि। तहिना सत्य कें झाँपल नहि जा सकै छै । माय कें आँखि मे नोर आ आँखि मे मिरचाई–––––।

घूरन– जाउ ने चाह–ताह बनाउ ने ।

(कौशल्या अवधेश कें देखैत कनैत प्रस्थान)

अवधेश– माय कें दोहराकऽ कनलाक बाद बात किछु फरिछाइत सन बुझाइए। ई सभटा दीपक बाबूक खेल छियनि।

घूरन– दीपक बाबू तऽ आहाँक शुभचिन्तक छथि।

अवधेश– मारू एहन शुभचिन्तक कें, एखन ई आयल हेता, आहाँ सबकें कहने हेताह जे डाक्टर एना कहलक ओना कहलक। हिनकर रोग जल्दी ठीक नहि हेतनि। हिनका मे एखन पानि जकाँ पाइ बहाबऽ पड़तनि। नाना प्रकारक गप्प कहने हेताह जकर निदान आहाँ सबहक वश के बात नहि। तै कानऽ लगलौं। कहू बाबूजी, इएह बात छै कि नहि ?

दीपक– आब बुझलौं आहाँ मोनक बात। आहाँक कहब अछि जे हम आहाँ घर मे खर्चा करबऽ चाहैत छी।

अवधेश– आर नहि तऽ की ? बाबूजीक दोसर कोला खेत बेचाबक प्लान मे छी आहाँ।

घूरन– आहाँ कें नीरोग हेबाक वास्ते खेत के कहए , हम अपना कें सेहो बेचि सकैत छी।

अवधेश– बाबूजी, आहाँ गम्भीर भऽ रहल छी। हमरा भऽ की रहल

अछि जे अपना आप कें बेचक बात कऽ रहल छी। ई डाक्टर–बैद्य जे कहए तकर ठीक उनटा बुझी। माने जौं कहए मोन खराब अछि तऽ बूझू मोन ठीक अछि। अरे अपने गामक बात लिअ ने , खंजू बाबा कें डाक्टर कहलकनि जे छः मासक अन्दर जौं पेटक ऑपरेशन नहि करऔताह तऽ मरि जेताह। खंजू बाबा डर सँ ऑपरेशन नहि करओलनि। अइ बातक छः मास तऽ छोड़ू छठम बरख बीत रहल छनि। दनदनाइत चलैत छथि। प्रताप काका कें डाक्टर कहलकनि हिनका लऽ जाउ। एकदम ठीक छथि, ओ गामो नहि आबि सकलाह बाटे मे स्वर्गारोहण कए लेलनि। डाक्टर–बैद्य बड़ झूठ बजैत छथि।

अभिषेक

अभिशेष– *(प्रवेश)* बाबूजी! माय कहलकए सब किओ अंगने मे आबि कऽ चाह पीबि लिअ।

घूरन– एतहि नेने आबह ने।

अभिशेष– गनि कऽ चारि कप चाह बनलए। एतऽ नेने आयब तऽ अनेरे लोकक जुटानी भऽ जाएत। चाह देखने लोक कौआ ज़काँ झमारि मारै छै। वएह देखै छियनि लूटन काका के अह्लू खेत मे ओ कप देखिते देरी सब समाँगे चलि अओताह।

घूरन– चलै चलह भीतरें जाकऽ चाह पीबी।

दीपक– हम चाह नहि पीब। एखन जाइ छी।

घूरन– *(आवेश सँ)* नहि दीपक। एना नै करू। अहींक शुभकामना तऽ हमरा सबकेंसबल बनौने अछि। आर गाम मे हमर कें अछि ? आहाँ अवधेश संगे आउ।

(घूरन आ अभिशेषक प्रस्थान)

अवधेश– हम जनैत छी जे आहाँ हमरा सँ किए रुष्ट भऽ गेलौं। जे बात हमरा नहि बजबाक चाही से बात सब माँ– बाबूजीक समक्ष बाजि आहाँक अपमान केलौं । ओइ लेल हम क्षमाप्रार्थी छी। दु:ख नहि करब दोस, एतेक जौं नहि बजितौं तऽ आइ हुनका सबकें सम्हारब कठिन छल। हुनका सबहक आत्मबल बढ़बक लेल बाजऽ पड़ल ।

दीपक– अवधेश! आहाँक बाजब सँ हम रुष्ट छी के कहलक ?

अवधेश– कहत के ? आहाँक उदासी हुलिया कहि रहल अछि। देखू दीपक, आहाँ हमर मित्र छी जे एकटा अटूटे बन्धन होइत छैक। मित्र सँ कोनो बात कें नुकेनाइ पाप मानल जाइत छैक।

दीपक– एहन कोन बात हमरा लग अछि जकरा हम आहाँ सँ नुका रहल छी। साइद गलतफहमीक शिकार भऽ गेल छी।

अवधेश– हम आ गलतफहमी। नो–नो दीपक। एखन आहाँ हमरा जे बुद्धू बना रहल छी तकर शिकार जरूर भऽ गेलहुँ।

दीपक– अन्तत: आहाँ कहऽ की चाहै छी ?

अवधेश– हम ई कहए चाहै छी जे आहाँ एखन जे किछु बजै छलौं से सबटा केबारक दोग सँ हम सुनि लेलहुँ।

दीपक– *(अकचकाइत)* अवधेश–––– !

अवधेश– यस माइ डीयर फ्रेन्ड, हम सबटा सुनि लेलहुँ।

दीपक– जे किछु आहाँ सुनलहुँ से झूठ छी।

अवधेश– चुप करू दीपक। झूठ तऽ एखन बाजि रहल छी। सत्य कें छुपा कऽ।

दीपक– ठीक छै, जौं आहाँ सुनैत छलौं तऽ कहि सकै छी हम की बजलहुँ ?

अवधेश– निश्चित कहि सकै छी ।

दीपक– बाजू तऽ हम की बजलहुँ।

अवधेश– यैह जे हम एकटा असाध्य रोग ''ब्लड कैंसर'' सँ पीड़ित छी । आब हम एहि घरक पाहुन छी।

दीपक– *(दुनु हाथे माथ पकड़ि)* अवधेश! ई झूठ छै, मिथ्या छै, सबटा असत्य छै।

अवधेश– की असत्य आ की सत्य से हम आ आहाँ बढ़ियाँ जकाँ बुझैत छी। देखू दीपक, हमरा घर मे जे एकटा समस्या ठाढ़ होइ वला अछि ओकर निदान कोना कएल जायत। हम मरऽ सँ पहिने अइ समस्या कें सोझराबय चाहैत छी। समय कम अछि।

दीपक– *(अनठबैत)* सत्य––असत्य––समस्या––समय। ई सब की बाजि रहल छी ?

अवधेश– दीपक! हमरा आँखि मे एखनहुँ छाउर झोंकबाक प्रयाश आहाँ कऽ रहल छी। हम तऽ मरिये जाएब मुदा अपना बारे मे कने सोचू ।ई जे एकटा पाप केलहुँ तकर प्रायश्चित्त कोना करब।

दीपक– पाप आ प्रायश्चित्त ? ई सब की बजै छी ? आखिर आहाँ कहए की चाहै छी ?

अवधेश– हम कहऽ चाहै छी जे आहाँ जानि बूझिकऽ एकटा कन्या कें मसोमात बनेबाक पाप केलहुँ तकर प्रायश्चित्त।

दीपक– अवधेश! हम आहाँक विवाह करेबा सँ काका–काकी कें बहुत बेर मना केने रहियनि। मुदा जानि ने हुनका सबहक माथ पर कोन भूत सवार रहन्हि। एकेटा जिद्द पकड़ने रहलाह विवाह करेबे करबै।

अवधेश– आहाँ कें साफ शब्द मे बीमारीक बारे मे कहि देबाक छल। नहि तऽ हमरा कहितहुँ मीत। *(चिन्तित मुद्रा मे)*

दीपक– प्रथम तऽ हुनका सबहक उम्र कें देखि डाक्टर मना केने छल, दोसर अपनो साहस नहि भेल जे एहन आघात ओ सब सहि सकताह, भरिसक नहि । विवश कऽ दै छल मुँह बन्द राखऽ पर।

अवधेश– फेर आइ तऽ मुँह खोलहेक पड़ल ।

दीपक– हम जहन दिल्ली गेल रही ओही छः मासक अनुपस्थिति मे आहाँक विवाह–द्विरागमन सबटा सम्पन्न भऽ गेल। ओइ दिन सँ भौजीक स्थितिक बारे मे सोचि कऽ चिन्तित रहैत छी– । आँखि सँ नीन्न उड़ि गेल अछि। मानसिक असन्तुलन व्यग्र कऽ दैअछि। जकर फल ई भेल जे आइ आवेश मे आबि हमरा मुँह सँ सब बात बहरा गेल।

अवधेश– जे सबटा हमहुँ सुनि लेलौं।

दीपक– सुनि लेलौं ताइ सँ इलाज मे कोनो फर्क नहि पड़ै छै।

अवधेश– फर्क पड़ै छै मित्र। ई रोग लाइलाज छै। ई बात जानि कऽ हम अपना कें मृत्युक अंक मे देखैत छी।

दीपक– आहाँ एना भयभीत नहि होउ मित्र।

अवधेश– हम मृत्यु सँ भयभीत नहि छी। भय अछि ओइ निस्सहाय अबला नारीक असीम दुःख, पीड़ा आ वेदना सँ। भय अछि अनजान मे हमरा सँ भेल गलती सँ। भय अछि ओहि अबला संग भेल हमर माता–पिताक अन्याय सँ। हम मृत्यु सँ भयभीत नहि छी, हम अपना आप मे मरि चुकल छी मीत! *(स्वर कें ढील करैत)* हमर मृत्युक पश्चात् ओकर पहाड़ सनक जीनगी एहि समाज मे कोना कटतै? की दशा हेतै अभगली कें ? *(व्यग्र भेल जाइत)*

दीपक– हमरा किछु नहि फुराइत अछि। हम स्वीकार करैत छी शोभक प्रति भेल अन्यायक जिम्मेदार हम छी। हमर चुप रहब हुनका लेल अंधकूप बनि गेलै। हम पाप केलहुँ , एकर प्रायश्चित्त हम कोना करब। *(कानऽ लगैत अछि)*

अवधेश– जाहिठाम पापक रास्ता होइ छै ओकर सटले प्रायश्चित्तक रास्ता सेहो रहैत छै।

दीपक– नहि अवधेश! एहन पापक प्रायश्चित्त लेल कोनो टा रास्ता नहि होइत छैक।

अवधेश– हम कहै छी आहाँ लेल रास्ता अछि प्रायश्चित्तक । अइ घोर पाप सँ मुक्ति पाबि सकै छी। अधीर भेला सँ समस्या सोझरै के बदला ओझरा जाइत छैक दीपक, रास्ता आहाँक सामने अछि,बस आहाँक ठमकल डेग कें उठबाक अछि।

दीपक– आखिर आहाँ कोन रास्ताक बात कऽ रहल छी ?
(दुनू गोटा गम्भीर होइत छथि।)

अवधेश– *(दीपक कें हाथ पकड़िकऽ)* दीपक , हमरा मृत्युक पश्चात् आहाँ शोभाक सँग विवाह कऽ लेब।
(नेपथ्य मे बिजलीक कड़कब – दीपक हतप्रत)

दीपक– *(उच्च स्वरें)* अवधेशऽऽऽऽ । ई की बाजि रहल छी? आहाँ पागल भेलौंहें ? एकटा पापक प्रायश्चित्त दोसर पाप कऽ कऽ होइत छैक ?

अवधेश– एकरा छोड़ि प्रायश्चित्तक कोनोटा दोसर रास्ता नहि अछि। यमराजक दूत प्रतिक्षण हमर पछोड़ धेने रहैत अछि। ओ कखनहुँ हमर प्राण कें झपटि सकै अछि।

दीपक– मातृतुल्य शोभा भौजी मे हम मायक रूप देखैत छी। कोना कऽ एहन बात आहाँक मुँह सँ बहरायल ? ओ आहाँक पत्नी छथि। आहाँ अपन पत्नीक पुनः विवाह करबऽ चाहैत छी। समाजक पहिल पुरुष छी आहाँ जे

पत्नीक विवाह----आहाँ पागल जकाँ बात करै छी। आहाँ पागल भऽ गेलउहैं।

अवधेश– *(आवेश मे)* हैं– हैं हम पागल भऽ गेलहुँ , सत्ते हम पागल छी। कने आहाँ सोचू , मोन कें स्थिर कऽ कऽ विचार करू। मृत्यु हमरा द्वारि पर प्राण हरण करबाक बाट देखि रहल अछि। दू सँ चारि दिनक हम पाहुन छी। काल्हि हमरा मरलाक बाद ओकर पहाड़ सनक जिनगी कोना कटतैक ? ओइ पढ़ल लिखल सुन्नरि पर लोक अन्टसन्ट लांछना लगओतैक। ओकरा कुदृष्टि सँ देखतैक । हम ओकरा सुरक्षित जिनगी दऽ कऽ मरऽ चाहै छी।

दीपक– एहन दिन भगवान नहि करइक जे मध्य आकाश मे सूर्य सूर्यास्तक रूप धारण कऽ लिए। हँ एकटा वचन दै छी जे शोभा भौजी पर कोनो तरहक संकट नहि आबऽ देबनि। ई वचन हम एकटा दोस्त हेबाक खातिर पूर्ण जिम्मेदारीक सँग निबाहब।

अवधेश– हमरा बाद सबटा जिम्मेदारी आहाँ निमाहब से विश्वास तऽ पहिने सँ छलए। मुदा--

दीपक– बस ! बस अवधेश। बस । अइ सँ आगू नहि बाजू।

(दीपक कानऽ लगैत अछि। अवधेश भरोस देबाक प्रयास करैत।)

अवधेश– जीबाक मोह ककरा नहि होइ छैक। हमरो जीबाक मोह अछि। *(कानऽ लगैत अछि।)*

दीपक– *(सांत्वना दैत)* कानू नहि मित्र। कानू नहि। आहाँ कें हमर शप्पत् सभ ठीक भऽ जेतै। आहाँकें किछु नहि होयत। भगवान चाहथिन्ह तऽ कोनो चमत्कार भऽ सकै छै।

(दुनू एक दोसर कें जिज्ञासा भरल दृष्टि सँ देखैत। केबारक दोग लग शोभा चाहक ट्रे नेने ठाढ़ अछि।)

*****



शोभा एवं अवधेश

अंक : पहिल

दृश्य : दोसर

(अवधेशक घर। शोभा देवाल पर टांगल भगवतीक सोझा बैसि कऽ विनती कऽ रहल अछि)

शोभा– हे जगत् जननी माँ! सबहक दुख हरण करऽ वाली भगवती! हमरा स्वामीक रोग दूर करू। हम आहाँ सँ धन–सम्पत्ति नहि मँगैत छी। हमरा सोहागक रक्षा करू माँ! बचा दिअ हमरा पति परमेश्वर कें।

भगवतीक गीत 'वन्दना'

(बाहर सँ अवधेश थाकल सन प्रवेश करैत अछि। शोभा कें देखि कऽ ठमकि जाइत अछि। दाढ़ी बढ़ल । केश उजड़ल । अपना कें संयमित करैत कृत्रिम प्रसन्नता प्रकट करैत आगू बढ़ैत अछि)

अवधेश– वाह! अति सुन्दर। भगवतीक अभ्यर्थना भऽ रहल अछि।

शोभा– *(आश्चर्य)* आइ डाक्टर लग सँ तुरन्ते घुरि एलौं ? की कहलन्हि डाक्टर साहेब ?

अवधेश– हमरा डाक्टर की कहताह! दवाइ खाइत जाउ। दवाइ खाइत जाउ। आहाँकें भगवती की कहलन्हि से कहू।

शोभा– *(अवधेश कें पकड़ि कऽ पलंग पर बैसबैत)* भगवती हमरे टा थोड़े छथिन्ह। ओ तऽ संसारक कल्याण करैत छथिन्ह। आहाँ हाथ पैर धो लिअ पहिने।

(अवधेश आंगन जाइत अछि)

शोभा– हे भगवती! हमर कष्ट कहिया बुझबै। रक्षा करू माँ!

अवधेश– *(आंगन सँ अबैत अछि)* भगवती यदि अन्तर्यामी छथि तऽ हमरा आहाँक हृदयक बात अवश्य जनैत हेतीह। जहन ओ सबटा जनिते छथि तहन हुनका कहल की जाए।

जीवन आ मृत्यु हुनके विधान छनि तहन अहि मे परिवर्त्तनक कामना केहन ? आहाँ हुनका सँ जे मँगबनि से ओ दऽ देतीह ?

शोभा– मोन सँ पूजा करबनि तऽ जे किछु मँगबनि से अवश्ये देतीह। हुनका मनवांछित फलदायिनी कहल गेल छनि।

अवधेश– मनुष्य अपना स्वार्थ लए जे किछु मँगतनि आ ओ दऽ देथिन्ह तहन ककरो दुख किएक हेतै ? ककरो मृत्यु किए हेतै ?

शोभा– आहाँ शुद्ध मोन सँ पहिने मँगियौन तऽ।

(अवधेश भगवती कें प्रणाम करैत अछि। शोभा सेहो आँखि मूनि कऽ प्रणाम करैत अछि। बीच– बीच मे अवधेश शोभा दिश देखि लैत अछि पुनः आँखि मूनि लैत अछि। शोभा अवधेश कें प्रणाम करैत अछि।)

अवधेश– आब कहू , आहाँ की मँगलौं ?

शोभा– पहिने आहाँ कहू ,आहाँ की मँगलौं ?

अवधेश– पहिने आहाँ कहू , आहाँ की मँगलौं ? तकरे बाद हम कहब। लेडिज फस्ट।

शोभा– मानू ने बात, पहिने आहाँ कहू , आहाँ की मँगलौं ?

अवधेश– ओना आहाँ नहियो कहब तकर बादो हम बुझैत छियै आहाँ की मँगलौं।

शोभा– हूँ, आब आहाँ दोसरो लोकक मोनक बात बुझऽ लगलियै ? चलू सेहो बाजू।

गीत (सम्भावित)

अवधेश– आहाँ इएह मँगलौं ने, जे हमरा पतिदेव कें जल्दी सँ जल्दी मोन ठीक कऽ दियौन। हुनका कहियो माथो नहि दुखाइन। हुनकर सबटा कष्ट दर्द हमरा दऽ दिअऽ। शोभा!

एतेक हमरे लेल किए मँगैत छी। किछु अपनो लेल माँगि लेल करू। ओना हम आहाँ लेल किछु नहि मँगलौं। किएक तऽ हमरा बुझल छल आहाँ अपना लेल नहि, हमरा लेल किछु माँगऽ जा रहल छी।

शोभा– आहाँक कल्पना गलत अछि।

अवधेश– अच्छा तऽ आहाँक की कहब अछि ? अइ पर सफाइ देबै।

शोभा– निश्चित देबै। संसारक सब प्राणी स्वार्थी होइत अछि। चाहे माय हो वा बाप, पति हो वा पत्नी वा सन्तान। जौं दोसर लए किछु माँगितो अछि तऽ ओइ मे निश्चित रूपें ओकर अपन स्वार्थ नुकाएल रहैत छै। हम जे किछु मँगलौं ओहि मे हमर स्वार्थ अछि।

अवधेश– एहन कोन स्वार्थ अछि, हमहूँ बूझी।

शोभा– आहाँक रोग ठीक भऽ जाए हम सही मँगलहुँ। अहीं हमर सोहाग छी जे नारीक एकमात्र प्राण होइ छै । इएह स्वार्थ अछि हमर। आहाँ की मँगलहुँ से कहू।

अवधेश– हम मँगलौं, हमरा जीवनसंगिनीक आँखि मे कहियो नोर नहि आबए। ओ सब दिन सोहागिन बनल रहए।
(आँखि नोरा जाइछ।)

शोभा– तहन आहाँ आँखि मे नोर किएक ?

अवधेश– एकटा बात मोन पड़ि गेल।

शोभा– एखन कोन स्पेशल बात मोन पड़ि गेल ? *(जाए लगैछ।)*

अवधेश– प्लीज शोभा, मजाक नै।

शोभा– हम मजाक नहि कऽ रहल छी। अच्छा बाजू।

अवधेश– आइ हम एकटा एहन आदमीक खिस्सा सुनलहुँ जाहि मे लेल गेल निर्णय ठीक छल वा नहि तकर उत्तर नहि भेटल। आहाँ सँ पूछू ?

शोभा– भला खिस्सा सुनऽ मे उत्तरक कोन काज पड़ि गेल ? ठीक छै पहिने खिस्सा सुनाउ।

अवधेश– एकटा आदमी छल। बूझू हमरे जकाँ। विवाह-दान भेलाक बाद खूब प्रसन्नता पूर्वक जीवन बिता रहल छल। एहि खुशी मे जानि ने ककर नजरि लागि गेलै। उठल एकटा विर्रो जाहि मे फँसि गेल ओ दम्पत्ति। पति ओकर बीमार पड़ि गेल। जनै छी ओकरा कोन बीमारी भऽ गेलै ?

शोभा– कोन बीमारी।

अवधेश– ब्लड कैंसर।

शोभा– *(आश्चर्य मे)* फेर की भेलै?

अवधेश– फेर हेतै की। एकबेर जकरा ई बीमारी पकड़ैत छै जिनगी लेलाक बादे छोड़ैत छै।

शोभा– तहन बस करू , हम एहन खिस्सा नहि सुनै छी

अवधेश– आहाँक कहब अछि किस्सा के हम आधे पर छोड़ि दी?

शोभा– हँ! आर नहि तऽ की ? एहन खिस्सा सुनैत हमरा नीक नहि लगैया।

अवधेश– एकटा बात बुझै छियै। खिस्सा जे बीच मे अटका कऽ छोड़ि दैत छैक तकर माय-बाप आन्हर भऽ जाइ छै।

शोभा– सत्ते ! तहन खिस्सा पूरा कऽ लिअ मुदा फेर कहियो एहन खिस्सा नहि कहब । हमरा डर होइया।

अवधेश– किछु दिनक बाद कैंसर सँ पीड़ित व्यक्ति मरि जाइत अछि। जनैत छी ओ मसोमात की करैत अछि ? ओ किछु दिनक बाद दोसर आदमीक सँग फेर वियाह कऽ लैत अछि। एखन ओ सुखी जीवन व्यतीत कऽ रहल अछि।

शोभा– रहए दिऔ। ओइ मौगीक ओकरे लग रह दियौ।
(बात बदलैत) दवाइ खाए के अछि से मोन अछि ने?

एक दिन जौं समय सँ नहि देब तऽ आहाँ अपना मोने नहि सकै खा सकै छी। *(जाए लगैछ)*

अवधेश– *(हाथ पकड़ैत)* छोड़ू ने दवाइ कें। एकटा बात पूछू ?

शोभा– जे कहबाक अछि से एकबेर कहू ने।

अवधेश– हम जे एखन खिस्सा सुनेलहुँ से आहाँ मोन सँ सुनलहुँ। कहू केहन लागल ?

शोभा– एकदम बेकार लागल ? एहन खिस्सा हमरा सुनाएब तऽ हम आहाँ सँ बात नहि करब।

अवधेश– एते अगुताउ नहि। सुनु। मनुष्य कें जीवन मे कतौ एहन मोड़ अबै छै जतऽ ओकरा अपन निर्णय स्वयं करऽ पड़ै छै। सबटा आदर्श, सिद्धांत एवं रूढ़िगत परम्परा कें ताख पर राखि जीबैत रहबाक लेल समझौता करऽ पड़ै छै।

शोभा– आहाँक कहबाक अभिप्राय की ?

अवधेश– हमर अभिप्राय ओहि महिलाक निर्णय सँ अछि जे दोसर विवाह कऽ लेलक। भरल जुआनी मे यदि कियो विधवा भऽ जाए तऽ ओ दोसर विवाह करबाक स्वतंत्रता रखैत अछि। बैधव्य जीवन मे अनेको कलंकक दाग लगेबा सँ बढ़ियाँ छै विवाह कए लेबाक एकटा कलंक।

शोभा– आहाँ एना बहकल बात किए करै छी ?

अवधेश– हम जीवनक यथार्थ कहि रहल छी। एहन घटना कतौ घटि सकै छै। हमरा संगे घटि सकै अछि। आहाँ संगे घटि सकै अछि।

शोभा– *(कनैत)* एहन बात नहि बाजू। *(छिटकि कऽ बैसि जाइत छथि)*

अवधेश– *(अधीर होइत)* हमरा आभास भऽ रहल अछि शोभा। हमर जीवन-लीला कोनो क्षण--- *(डेग लटपटाए लगै छै)* शोभा आहाँ दोसर विवाह कऽ लेब। *(तलमलाइत)*

शोभा– *(आक्रोश सँ कनैत)* आहाँ हमरा की बुझै छी ? आहाँ अपना बारे मे एना किए सोचै छी। जाउ हम आहाँ सँ बात नहि करब। *(मुड़ी गोति लैत अछि)*

अवधेश– *(शोभा लग जाइत)* शोभा, हमर स्थिति ठीक नहि बुझा रहल अछि। आहाँ हँ कहि दिअऽ----।

शोभा– *(उठि कऽ जाए लगैत अछि)* नहि--नहि--नहि--।

अवधेश– *(आँचर पकड़ि लैत अछि आ पलंग लग पहुँचैत अछि)* शोभा हमरा पकड़ि लिअ ---हमर यंत्रणा बढ़ि रहल अछि। *(पलंग पर खसि पड़ैत अछि)*

(शोभा केबार लग कानि रहल अछि, अवधेश कें नहि देखैत छै)

अवधेश– *(दर्द सँ छटपटाइत.....)* शोभा, लग मे आउ। शोभा!

शोभा– *(घुमिकऽ देखैत आ चिचिआइत)* की भेल ? माँ--- बाबूजी--- अभिषेक --दौड़ू। मोन वेशी खराब भऽ गेलनि।

(कौशल्या आ अभिषेक अबैत अछि। शोभा अवधेशकें भरि पाँज पकड़ि कोरा मे लेने अछि)

कौशल्या– *(माथा दबबैत)* की भेल बाउ, *(अभिषेक कें इशारा सँ लोक कें बजबऽ कहैत अछि । अभिषेक दौड़ैत अछि)*

अवधेश– शोभा आहाँ ठीक सँ सोचि लेब। माय.......

कौशल्या– की भेल बाबू। आहाँ एना किए बजैत छी ?

अवधेश– हमरा....लग...समय नहि अछि। कने दीपक...... बाबूजी......दर्द बढ़ि रहल अछि। *(छटपटाहट बढ़ि रहल छै)*

अभिशेष– *(नेपथ्य सँ)* दीपक भैया, दौड़ू! जल्दी आउ, भैयाक मोन बड़ जोर खराब छनि। बाबू जी!!

कौशल्या– दीपक अबिते हएत। आहाँ घबराउ नहि।

(घूरन बाबू दौड़ल अबैत छथि।)

शोभा– बाबूजी! डाक्टर लग लऽ चलथुन्ह।

अवधेश- कोनो प्रयोजन नहि। हमरा ..... आब ..... किओ..... नहि .....बचा सकैत अछि (उठक प्रयास- असफल।)

घूरन- बौआ घबराउ नहि। दीपक अबैये, डाक्टरे लग लऽ चलै छी । आहाँ कें किछु नहि हैत।

(शोभा टेबुल पर सँ दवाइ अनैत अछि)

अवधेश- प्रयास..... बेकार अछि। शोभा ..... अपन रक्षा ..... आहाँ स्वयं करब।

(अभिषेक संगे दीपकक प्रवेश)

दीपक- की भेल अवधेश! (अवधेशकें देखिकऽ) काका, तैयार होउ। हम जीप लबै छी।

(जाए चाहैत अछि कि अवधेश दीपक कें हाथ पकड़ि लैछ)

अवधेश- दोस....हम दोस्ती.... नहि निमाहि सकलौं। मुदा..... आहाँ ..... जरूर .....निमाहब। शोभाक रक्षा करबै। हम .....हम आहाँ सबकें..... छोड़ि कऽ जा रहल छी।

(उठबाक प्रयास करैत अछि, असह्य वेदनाक संकेतक संग धम्म दऽ पलंग पर खसि पड़ैत अछि। सब कियो चित्कार कऽ उठैत अछि।)

(नेपथ्य सँ ह्रदय विदारक करुण स्वर आबि रहल अछि।)

अभिषेक- भैया!---भैया!--भैया!--(कानऽ लगैत अछि।)

शोभा- (अवधेशक पैर पर माथा पटकि-पटकि कऽ कानऽ लगैत अछि)

कौशल्या- (हाथ पर मुड़ी राखि कनैत अछि। घूरन आ दीपक हतप्रभ मौन ठाढ़ अछि। आँखि सँ नोर बहल छै जा रहल छै। नेताजी, मनटुन आ शिखरदेव बतिआइत अबै छथि। शिखर अवधेश केंदेखि घूरि जाइत)

मनटुन- थहाथही किए सबगोटा करै छी ? उठाउ आ लऽ चलू डाक्टर लग। (अवधेश कें देखि कऽ नेताजी लग्ग अबै छथि)

शिखर- आब डाक्टर की करतै ? जे हेबाक छलै से भऽ गेलै। –बात जानी साफ-साफ।

मनटुन- हठात एना कोना भऽ गेलै। ई मृत्यु रहस्यमय लगै अछि।

नेताजी- तैं पोस्टमार्टम जरूरी छै।

(तीनू गोटा गोलैसी करै छथि। षडयंत्रक संकेत)

(अवधेशक लहास पर सँ कौशल्या कें दीपक हटा दैत छै। अभिषेक आ दीपक मिलिकऽ शोभाकेंघीचै छै, शोभा बेहोश सन भेल ठकमूड़ी जकाँ देखाइत अछि)

मनटुन- ठीक कहै छी नेताजी, एकर पोस्टमार्टम हेबाक चाही। कानूनी बात छैक।

शिखर- आहाँक तऽ कुटुम्बे छथि । तहन आहाँ सँ वेशी नीक के सोचतै। (कटाक्ष) बात जानी साफ-साफ।

नेताजी- कोनो घटनाक पाछू एकटा कारण होइत छै। अवधेशक मृत्युक पाँछा सम्भव छै कोनो एहन कारण होइ जे पोस्टमार्टम सँ ज्ञात भऽ सकए।

मनटुन- घूरन बाबूक पुतोहु हमरा सारक बेटी अछि। विवाहक चर्चा होइत देरी दीपक एकर विरोध मे रहए। ओ नहि चाहैत रहए जे अवधेशक विवाह हमरा सारक बेटी सँ होइ।

शिखर- अवधेशक संगे इलाजो करबऽ दीपके जाइ छलै।

नेताजी- अवधेशक कनियाँक देखभाल सेहो आब इएह करत। कनियाँ सुन्नर छै। (व्यंग्यात्मक) अइ घरक मालिक आब दीपक।

मनटुन- (शोर पाड़ैत) दीपक।

दीपक- (सुस्त स्वर सँ) हँ।

मनटुन- अवधेश कें अस्पताल लऽ चलू।

दीपक- काकाजी आब कोनो लाभ नहि। सब किछू समाप्त भऽ गेलै। (कानऽ लगैत अछि।)

शिखर– से आहाँ कोना बुझै छियैक ? नेताजीक कहब छनि जे –बात जानी साफ–साफ

दीपक– *(बीचहि मे हनहना कऽ अबैत अछि)* की कहब छनि ?

नेताजी– पोस्टमार्टम।

दीपक– *(आश्चर्य सँ)* ई की ? आहाँ सब केहन हृदय विहीन मानव छी। एको रत्ती मानवीय संवेदना नहि। अहि ठाम हाक–डाक पड़ल अछि आ आहाँ सबके खेल सुझैत अछि।

नेताजी– जहन संदेह जन्म लै छै तऽ ओकर समाधान आवश्यक छै.

दीपक– संदेह, कथीक संदेह ?

मनटुन– इएह अवधेशक हठात् मृत्यु।

दीपक– आहाँ सब गोटा जनैत छी जे अवधेश केहन बीमारी सँ ग्रसित छल। आ जे नहि जनै छी तऽ जानि लिअ – 'ब्लड कैंसर' डा० अविनाश ओकर इलाज करैत छलाह। *(कनैत)* आहाँ सबहक विचार पर घृणा होइत अछि।

शिखर– नेताजी बिना पोस्टमार्टम करौने नहि छोड़ता – बात जानी साफ–साफ।

दीपक– ह्वाट ननसेन्स!

मनटुन– हमरा सबहक सन्देह आहाँ पर जाइत अछि। आहाँ शोभाक विवाह सेहो रोकैत रहियै।

दीपक– हँ! अइ बीमारी दुआरे रोकैत रहियै। मुदा आहाँसब मानबें नहि केलौं। ओइ बेचारी कें जब्बह कऽ देलियै।

नेताजी– समय नष्ट केने कोनो लाभ नहि *(दीपक दिश वक्र दृष्टि।)*

दीपक– *(नेताजी सँ नजरि मिलाकऽ)* हमरा बुझऽ मे भाँगठ नहि अछि नेताजी। आहाँ सबक एहन घृणित विचार कियैक अछि। घाव कतौ पऽ कतौ। मुदा ध्यान सँ सुनि लिअ, हमरा मित्रक पार्थिव शरीरक काँट–छाँट नहि हएत। आहाँ सब जा सकैत छी।

नेताजी– जाए लए नहि हर्जा मुदा घटना पर पर्दा......

शिखर– *(नहुंए सँ)* मामला कहीं बिगड़ि ने जाए। –बात जानी साफ – साफ।

दीपक– बिगरि जाएत तऽ बिगड़ि जाएत। जकरा जे फुराय से करू गऽ। *(माथ पकड़ि कऽ दीपक बैसि जाइछ।)*

मनटुन– *(नेताजी सँ)* छोड़ब नहि नेताजी। मुखियाक बेटा दीपका कें रगड़ि कऽ राखि देबै आ तहन भजेन्द्र मुखिया कें देखि लेबै – चलू थाना। *(क्रोध मे प्रस्थान)*

दीपक– *(कनैत)* हे भगवान! केहन दिन देखा रहल छऽ। एक दिश मित्रक मृत शरीर अछि आ दोसर दिश समाजक ठेकेदार दानव। हमरा शक्ति दिअ भगवान! हमरा शक्ति दिअ!

(अभिषेक दीपक कें बाँहि पकड़ि कऽ उठाबऽ चाहै छै। दुनू फफकि कऽ कानऽ लगैत अछि। पलंग लग सेहो सब कानऽ लगैत अछि।)

(प्रकाश शनैः शनैः लुप्त होइछ। नेपथ्य सँ करुण वाद्य, मेघक गर्जन, विद्युतक चमक)

मध्यान्तर



अंक : दोसर

दृश्य : पहिल

(भजेन्द्र चौधरीक दलान। दलान मे सोफा। भजेन्द्र चौधरीक प्रवेश। हाथ मे अगरबत्ती। हनुमान चालीसा पढ़ैत। शिखर डेग मारि कऽ प्रवेश करैत छथि। एक दोसर कें नजरि मिललाक बाद)

भजेन्द्र– की शिखरदेव बाबू! मुखिया चुनावक की हाल अछि ?

शिखर– मुखियाजी! अइ बेरका चुनावी हाल-चाल बड़ गरम अछि। –बात जानी साफ – साफ।

भजेन्द्र– से की बजैत छी ? एहन कोन नया खबरि पहुँचि गेल बाजार मे ?

शिखर– अहि बेर अपना पार्टी सँ मुखिया एलेक्सन मे नेताजी स्वयं लड़ता। तहन ई बटखरा बड भारी पड़त। अइ बेरुका मुखिया एलेक्सन कोनो नव चमत्कार करत। औ-जी, हम ठहरलहुँ आहाँक पुरान शुभचिन्तक तैं आबि गेलहुँ एकटा खबरि लऽकऽ। –बात जानी साफ – साफ।

भजेन्द्र– शिखरदेव बाबू! भजेन्द्र चौधरी आइ धरि पलड़ा मे राखल बटखरा के नहि देखलक। बटखरा सबदिन प्रतीक्षा मे रहल आ रहत। ओ बनियाँ बूड़िबक होइत अछि जे पलड़ा पर बटखड़ा रखला सँ पहिने सामान चढ़ा दैत छै।

शिखर– मुखियाजी, कखनो कखनो सामान पहिने आ बटखरा बाद मे चढ़बैत छै तऽ संयोग सँ ओ सामान बटखरा मुताबिक भऽ जाइ छै । –बात जानी साफ – साफ।

भजेन्द्र– शिखरदेव बाबू! किओ दोसर मुखिया हएत से सपना देखैयै आ हम मुखिया भऽ कऽ बैसल छी। *(हँसैत)*

शिखर– मुखियाजी, आहाँ ओना जे कहियौ, मुदा अहि बेर जौं नेताजी ठाढ़ भेला तऽ एलेक्सन जितबे करताह। –बात जानी साफ – साफ।

भजेन्द्र– भजेन्द्र चौधरी आइ पंचायत मे सब दिन सँ मुखियाक कुर्सी सुशोभित केने छथि। आइ काल्हुक टुटपुजिया नेता हमरा हरा देत से सम्भव नहि थिक।

शिखर– देखू मुखियाजी, एलेक्सन लड़बाक रणनीति हमरा साफ तरहे कहि दिअऽ। तकरा बादे हम पाछाँ-पाछाँ घूमब। –बात जानी साफ – साफ।

भजेन्द्र– एहि बेर हमर सबसँ पैघ चमत्कार तऽ ई अछि जे हमहूँ मुखिया एलेक्सन स्वयं नहि लड़ि रहल छी।

शिखर– *(स्वत:)* जय श्री राम–हे पवनपुत्र हनुमान। हमर मिनती सुनि लेलहुँ। *(प्रकट)* मुखियाजी! पार्टीक बैसक मे हमरा टिकट देबाक विचार भेलए की ?

भजेन्द्र– *(हँसैत)* अहूँ सपना देखऽ लगलौं हें। अइ पंचायत मे सब दिन सँ मुखिया चौधरी परिवार सँ होइत आबि रहल अछि आ जाबे तक भजेन्द्र चौधरीक खानदान रहत मुखिया होइत रहत। जाहि दिन अइ परम्परा कें कियो तोड़ैक प्रयास करत ओहि दिन खूनक धार बहि जायत।

शिखर– *(स्वत:)* लगैत अछि जेना जनतन्त्र नहि जनफन्द आबि गेलैयाए। हाय रे एतुक्का बुझनुक वोटर।

भजेन्द्र– *(हँसैत)* एतुक्का वोटर–अरे ई जनता जनार्दन तऽ हमरा मुट्ठीक गुलाम छी। एक बोतल दारू आ दसटा टाका एतुक्का वोटरक दाम हम रखने छी। जेम्हर जखन घुमाएब घूमत। तैं हजार पैक दारूक व्यवस्था कऽ रहल छी।

शिखर– सब चीजक इन्तजाम समय सँ पूर्व भऽ जायत। रणनीतिक अगिला अध्याय पर चलू। –बात जानी साफ – साफ।

भजेन्द्र– हमर तऽ पुरने रणनीति रहत। बूथ पर दसटा लठैत लऽ जाएब। सबकें झूरमूट कऽ पिया देबै। जतेक नीक लोक वोट खसबऽ अओताह सबकें बापे पुते गरिऔत। अपने सब मूड़ी गोति कऽ पड़ायत। तकर बादो जे नहि भागत तऽ ओकरा लाठी सँ सनकुट्टा उड़ा देतै। बूथ कैपचर कऽ लेत। घण्टा दू घण्टा के अन्दर सबटा बैलेट पेपर छापि देत। मुदा अहि बेर एतेक नहि करऽ पड़त। कारण अइ बेरुका उम्मीदवार स्वच्छ, चरित्रवान, योग्य, कर्मठ आ लोकप्रिय रहत।

शिखर– ओ उम्मीदवार के छथि ? झटदऽ कहियौ ने ? –बात जानी साफ साफ।

भजेन्द्र– ओ उम्मीदवार हमर पुत्र दीपक छथि। कहू शिखरदेव बाबू केहन लागल हमरा पार्टीक उम्मीदवार ?

शिखर– मुखियाजी आहाँ तऽ नाक काटि लेलियनि नेताजी के। जाउ आहाँ कान मे तेल तूर दऽ कऽ सूति रहू। खानदानी परम्परा कायम रहि गेल। –बात जानी साफ – साफ।

भजेन्द्र– आब हमरो वयस भेल। अपना सँ सब काज नहि सम्हरैत अछि। तैं अकस्मात ई निर्णय लेलौं।

शिखर– जे किछु आहाँ निर्णय लेल बड़ नीक। बूझू सोना मे सोहागा। परन्तु आहाँक बच्चा आहाँक निर्णय सँ सहमत छथि ? से –बात जानी साफ –साफ।

भजेन्द्र– ओजी, अहूँ की बाजि रहल छी? बेटा कतौ बापक आदेश कें टारलकैऐ ।

दीपक– *(भीतर सँ बाहर जेबाक उपक्रम)*

भजेन्द्र– भने ओहो आबिए गेल। मुखोत्तरे करा दी। दीपक ! कने रुकू।

दीपक– बाबूजी, कने जल्दी मे छी।

भजेन्द्र– जल्दी, जल्दी, जल्दी। सब समय आहाँ कें जल्दीये रहैत अछि। आखिर ओइ जल्दबाजीक कारण की थिक ?

दीपक– हम कने संगी ओइ ठाम सँ अबैत छी।

भजेन्द्र– संगी-संगी-संगी। सदिखन संगी ओइठाम। एतेक दिन आहाँक संगी जीबैत छल तऽ हम चुप केने छलौं। आब तऽ ओ स्वर्ग सिधारि गेला। बन्न करू ई सब नाटक। बहुत दिन चलल। एखन जीबैत मनुष्यक संग सम्बन्ध जुड़ैत नहि छै आ आहाँ मुइलाहा आदमीक संग सम्बन्ध जोड़ऽ चललौं हैं।

दीपक– बाबूजी ! आहाँ की कहऽ चाहैत छी ?

शिखर– बड़का बाबू! मुखियाजीक ठीके कहब छनि। नेता आ अभिनेता घर सँ कम निकलए तखने आकर्षण रहि सकैत छै। दूनू पर भीड़ जमैत छै। आखिर आहाँ अइ पंचायतक भावी मुखिया छी। – बात जानी साफ साफ।

दीपक– भावी मुखिया ! ई सब बात के कहलक आहाँ के?

शिखर– बड़का बाबू, एना अकचकाइत किए छी ? मुखियाजीक पार्टीक निर्णय भेलनिहैं जे अइ बेर अहीं के मुखियाक टिकट देल जाए। –बात जानी साफ –साफ।

दीपक– बाबूजी, ई सब की नाटक छै। आहाँ के कएबेर कहि चुकल छी–हमरा अहि घटिया पोलिटिक्स सँ कोनो इन्टरेस्ट नहि अछि। आइ काल्हुक गन्दा पोलिटिक्स कुर्सी पएबाक दौड़, एहि सब मे हमरा नहि सानू।

शिखर– बड़का बाबू, पोलिटिक्स के सिवाय आइ काल्हि होइते की छैक ? बिना पोलिटिक्स के कोनो काज नहि होइत छैक। –बात जानी साफ – साफ।

दीपक- घर-घर मे प्रदूषित राजनीति ढुकल जा रहल अछि जे समाज कें असुरक्षित केने जा रहल अछि जकर उत्तरदायी आपस्वार्थी खुदरिया नेता सब अछि।

भजेन्द्र- *(क्रोध सँ)* दीपक!

दीपक- बाबूजी, हम तऽ चुप रहऽ चाहैत छी। परन्तु आहाँ हमरा मुँह मे आंगुर दऽ कऽ बजबैत छी, । ई मुखिया पद कोनो खानदानी नहि छै। हम देखि रहल छी। अइ पंचायत मे हमर बाबा मुखिया भेला तकरा बाद आहाँ भेलौं आब हमरा सानऽ चाहैत छी। कोनो जेरूरी नहि छै हमहूँ अइ कुर्सीक सुख उठाबी। हमरा एहि मे कोनो रुचि नहि अछि। हमरा जाए दिअ। *(प्रस्थान)*

शिखर- मुखियाजी,आहाँक बच्चा तऽ आहाँक संविधान सँ पूरा-पूरी विपरीत बुझाइत छथि। -बात जानी साफ -साफ।

भजेन्द्र- एखन नव शोणित छै तैं एतेक जोश मे बजैत अछि। हमहूँ जहन एहि उम्रक रही तऽ एहने बात सब कहै छलियैक। देखू ने आइ हमहूँ ओही संविधान पर चलि रहल छी। खर्चा-पानी मे कटौती कऽ देबै फेर देखियौने अपने सरसरायल हमरा पाछू-पाछू चलत।

शिखर- से तऽ ठीके कहैत छी, आहाँक रणनीति सँ पूर्ण रूपें जानकार छी । तहन दारू-बोतलक आर्डर-- ओहि लेल कैंचा--बात जानी साफ - साफ।

भजेन्द्र- हँ! हँ! हम टाका दऽ रहल छी। ई लिअऽ दारुक आर्डर दऽ दियौ। *(तीन सौ टाका दै छथि, शिखरदेव पाई रखैत आछि)*

शिखर- तखन आब हम चलै छी *(घूमिकऽ)* एकटा बात बाँकिये रहि गेल........। - बात जानी साफ - साफ।

भजेन्द्र- से आब की बाँकी रहल ?

शिखर- लठैत सबके सेहो तैयार रखनाइ अछि.........।

भजेन्द्र- हँ! हँ! लठैत सबके कहियौ लाठी मे तेल पियाकऽ राखत।

शिखर- सएह। ओकरो सबहक हाथ मे दू चारि सए नहि दऽ देबै तऽ अनठा देत। -बात जानी साफ - साफ।

भजेन्द्र- अहूँ के फरिछाकऽ बाजल नहि होइयाए। कहूने आरो चाही *(दू सौ टाका आर दैत।)* लिअ आब तऽ भऽ जायत ने?

शिखर- ई तऽ बोहनी भेलै। आहाँ खर्चाक डरे कोनो डेराएबला छी ? तऽ आब चलैत छी। -बात जानी साफ-साफ।

भजेन्द्र- राफ -साफ *(आंगन दिश प्रस्थान।)*

शिखर- *(रुपया गनै छथि आ घर कें नमस्कार करै छथि)* आब हमरा हाथ लक्ष्मी चलि एली। भजेन्द्र चौधरीक बेटा जितलनि तैयौ आ नहि जितलनि तैयौ कटहर सती लए। ओहि सँ हमरा कोन मतलब -बात जानी साफ-साफ। ओजी आहाँ सबकें ने होइत हएत जे नेता बननाइ साधारण बात छै। देखियौने कतेक मेहनति लगैत छै। हम तऽ आहाँ सबके पहिने कहने छी। सबपार्टीक लोक हमरा अपनहि पार्टीक लोक बुझइत अछि। मुदा हम ककरो नहि। नेङरडोलाओन। एक पार्टी सँ निपटलहुँ आब दोसरक हाल देखी -बात जानी साफ-साफ। ई सभ बातक चमत्कार छै।

*****

अंक : दोसर

दृश्य : दोसर

(गामक मन्दिर। सांझक समय। साष्टांग दण्डवत मुद्रा मे नेताजी। शिखर नेताजीकें नहि देखैत छथि। भगवतीक स्मरण करैत धड़फड़ाएल अबै छथि। नेताजी टाँग पर पैर धरा जाइ छन्हि आ ओङ्ढाकऽ खसि पड़ै छथि।)

नेताजी– इस्स टाँग तोड़ि देलक।

शिखर– बाप रे बाप।

(दुनू दू दिशा मे गुड़कैत आमने-सामने भऽ जाइत छथि)

नेताजी– केहन बूड़ि छी आहाँ। आन्हर जकाँ चलैत छी।

शिखर– आन्हर भऽ गेल छी नेताजी।

नेताजी– हम आन्हर छी कि आहाँ।

शिखर– एखन दुनू गोटे। –बात जानी साफ–साफ।

नेताजी– *(उठि कऽ बैसैत)* एहन अनटोटल बात किएक बजैत छी।

शिखर– समय बजा रहल अछि। मुखिया चुनाव आन्हर कऽ देने अछि।

नेताजी– फेर हमरा आन्हर कऽ देने अछि?

शिखर– एखन दुनू गोटा के । –बात जानी साफ – साफ।

नेताजी– आहाँ महाबुड़ि जकाँ बात करै छी।

शिखर– आहाँ सँ कम क़िए रहब नेताजी। आहाँ संगे रहि कऽ इएह बनब ने। *(उठि कऽ बैसैत)*

नेताजी– *(ठाढ़ होइत)* इस्स टाँग मे भरिसक मोच पड़ि गेल। *(नेंगड़ाइत)* हे भगवती! कहाँ सँ ई आफद पठा देलहुँ।

शिखर– *(ठाढ़ हेबाक चेष्टा करैत)* आफद नहि नेताजी। सेवक कहियौ। –बात जानी साफ – साफ। अहींक काज लए हमरा भगवती पठौलनि।

नेताजी– हमरा काज लए ? केहन काज ?

शिखर– *(कहरैत)* पहिने हमरा उठाकऽ बैसाउ।

(नेताजी बड़ कष्ट सँ शिखरदेव कें घिसिया कऽ बैसा दैत छथि)

शिखर– *(टाँग मे दर्दक अभिनय करैत)* हम अहीं ओइ ठाम जाइ छलौं। जौं भगवती आहाँ देह पर हमरा नहि पटकि दीतथि तऽ एकटा आवश्यक सूचना हम नहि दऽ पबितौं। *(टाँग सोझ करैत)* अरे बापरे बाप।

(नेताजी चबूतरा पर बैसऽ चाहैत छथि। शिखर नीचा मे बैसबाक इशारा करै छनि।)

नेताजी– केहन सूचना ?

शिखर– *(कहरैत टाँग देखबैत)* अरे बापरे बाप।

नेताजी– ई कोन सूचना भेलै ?

शिखर– *(नेताजीक हाथ पकड़ि अपना टांग पर रखैत)* एतऽ। हँ एतऽ चोट लागि गेल। हम जे सूचना देब ताहि सँ अहूँके चोट लागि सकैयाए। –बात जानी साफ – साफ।

नेताजी– *(शिखरक पैर दबबैत)* यौ फरिछाकऽ बाजू ने। अनेरे तिल कें तार बनौने छी। भगवती कें हम एखनहि कबुला केलहुँ हैं जे अइ बेर भजेन्द्र चौधरी कें मुखिया चुनाव मे हरा देब तऽ तीनटा खस्सी चढ़ाएब।

शिखर– नहि चढ़बऽ पड़त। –बात जानी साफ साफ।

नेताजी– *(जतनाइ छोड़ि हटि जाइत छथि)* एहन अलच्छ बात किए बजैत छी।

शिखर– किएक तऽ भजेन्द्र चौधरी नहि ठाढ़ हेताह।

नेताजी– तहन तऽ आर बढ़ियाँ। दोसरक हमरा डरे नहि।

शिखर– साँप आ साँपक पोआ मे कोनो अन्तर नहि। –बात जानी साफ – साफ।

नेताजी– की मतलब?

शिखर– मतलब ई जे एकटा चरित्रवान, कर्मठ, समाजसेवी दीपक चौधरी वल्द भजेन्द्र चौधरी ठाढ़ भऽ रहल छथि।

नेताजी– से की ?

शिखर– इएह खबरि सुनबऽ जा रहल छलौं।

नेताजी– शिखरदेव बाबू , ई नया खबरि आनि हमर बनाएल रणनीति पर पानि ढाड़ि देलहुँ। ई तऽ चमत्कारी लागि रहल अछि।

शिखर– चमत्कारी नहि, विचित्रकारी कहू नेताजी। विचित्रकारी अपन लोक बुझि ई संवाद कहैक लेल एलहुँ । आहाँ आब भेलहुँ बूढ़ बुढ़ानुस आ प्रतिष्ठित लोक। आहाँ कें ठाढ़ हेबाक मतलब भेल प्रतिष्ठा कें दाव पर लगेनाइ तैं कोनो नवयुवक कें ठाढ़ करू। नहि तऽ आहाँक जमानत .... । तखन आब हम चलैत छी। हमरा सबकें तऽ अपन खर्चो पर आफद पड़ल अछि। अहीं सबहक दयादृष्टि पर खेप रहल छी। –बात जानी साफ – साफ।

नेताजी– *(टाका निकालि दैत छथि)* लिअ ओऽ फेर एहन बात मुँह सँ नहि निकालब। हँ, एकटा बात सुनि लिअ। एहि बेर आहाँ दलान पर हमरे पार्टीक झंडा आ माइक टाँगल जाएत।

शिखर– यौ नेताजी, एकटा झंडा नहि हजारो झंडा हमरा दलान पर अपना पार्टीक टाँगि देबैक। दसटा वाकर लगा देबैक एहि लेल चिन्ता किए करै छी ? –बात जानी साफ-साफ।

(नेताजी पुनः साष्टांग दण्डवत करैत छथि)

शिखर– *(स्वतः)* पाँच सौ टाका तऽ ठकलियनि। पाँच आ पाँच भेल दस। मुखिया एलेक्सन मे हजार बहुत भेल। आब

अनेरे देखार कथी लेल हएब। चुपचाप गाम सँ सड़कि कऽ पटना चल जाइ छी। फेर मौका कुमौका बीच मे आएब। ताबत ई सब कुकुर जकाँ लड़ैत रहथु। हम –बात जानी साफ साफ।

(प्रस्थान। पाछाँ सँ मनटुन बाबूक प्रवेश)

मनटुन– नमस्कार नेताजी !

नेताजी– नमस्कार मनटुन बाबू ! नमस्कार ! कीयौ गाड़ी बड़ा लेट चलि रहल अछि।

मनटुन– काल्हिये भेंट करैक लेल रही। एकटा दोसर काज मे बाझि गेलहुँ। साँझो मे आहाँक समाद पहुँचल। सुनलहुँ अइ बेर अपने चुनाव मे ठाढ़ भऽ रहल छी।

नेताजी– ठाढ़ तऽ भऽ रहल छी मुदा---।

मनटुन– मुदा की ?

नेताजी– अइ बेर भजेन्द्र चौधरी मुखिया मे ठाढ़ नहि होयता, हुनक चरित्रवान बेटा दीपक ठाढ़ होएता।

मनटुन– ई तऽ बड़ हलचलबै बला न्यूज थीक।

नेताजी– हँ मनटुन बाबू। ई न्यूज चिन्ता मे धऽ देलक। भजेन्द्र चौधरी क विरुद्ध हम स्वयं ठाढ़ होइक निर्णय लेने छलहुँ किन्तु आब तऽ एहन युवा उम्मीदवारक चयन करबाक अछि जे ओकरा बेटाक आगा मे ढठि सकय।

मनटुन– नेताजी, आहाँ चिन्ता जुनि करू। हम बीमारीक नाम सुनैत दवाइक निर्माण कऽ दैत छियैक। ओजी दलाल काका जेल चलि गेलथि तैं नहि तऽ अहि गामक चलाक सँ चलाक लोकक आँखि मे धूरा झोंकि कऽ बाजी जीतैत छलौं। फेर ई भजेन्द्र मुखिया की थिक। आहाँ हमर बताओल रास्ता पर चलू। पार्टीक विजय निश्चित अछि।

नेताजी– पहिने रास्ता तऽ बुझाउ।

मनटुन– नेताजी, हम आहाँकें एहन नव उम्मीदवारक नाम कहि रहल छी जे ओ ठाढ़ भऽ जायत तऽ फेर अहि पंचायत मे कियो एहन नहि हएत जे ओकरा वोट नहि देत। भारी मत सँ ओ विजयी हएत । किन्तु ओ ठाढ़ हएत तखन।

नेताजी– पहिने ओइ उम्मीदवारक नाम तऽ बुझी।

मनटुन– नेताजी, ओइ उम्मीदवारक नाम थिक घूरन बाबूक विधवा पुतोहु। हमर सारक बेटी। अवधेशक कनियाँ।

(दुनू गोटा प्रसन्नता सँ एक दोसर कें देखै छथि)

मनटुन– घूरन बाबूक बेटा के मरलाक बाद ओहि परिवारक प्रति लोक कें सहानुभूति छै। फेर ओ मसोमात पढ़लि लिखलि सन्नरि छै। जँ आहाँक पार्टी हुनका उम्मीदवार बना ठाढ़ करत तऽ विजयश्रीक माला पहिरऽ सँ केयो नहि रोकि सकैत छै।

नेताजी– ई बात सोलहो आना ठीक। चित आ पट दूनू हमर।

मनटुन– बात आगा बढ़बैक लेल घूरनबाबू लग ई प्रस्ताव राखऽ पड़त। एकटा बात करू। हम आगाँ बढ़ै छी। किछु कालक बाद आहाँ आयब। *(प्रस्थान)*

नेताजी– एकरा कहै छै धोबिया पाट। दीपक ओइबेर नहि फँसल। एहि बेर कतऽ जाएत। घूरनक पुतोहु जीतल तऽ हम जीतलौं। जय माँ काली।

(नेताजी पुनः साष्टांग दण्डवतक मुद्रा मे)

****

अंक : तेसर

दृश्य : पहिल

(अवधेशक घर। पलंगक स्थान पर पटिया। शोभा विधवा वेश मे दुर्गा पाठ कऽ रहल अछि। तमसायल कौशल्या शोभा कें देखि उग्र होइत)

कौशल्या– गे दाइ। देखू महत्मैन कें। लागि रहल अछि जेना एतऽ कोनो यज्ञ ठानल अछि। भानस–भात बना कऽ चारि–चारि पाँच–पाँच घण्टा पूजा–पाठ होइत अछि। *(दुर्गा पोथी छीनि लैत अछि आ शोभा कें घिसिया कऽ लबैछ)* आब ककरा लए पूजा होइ छै। खेलौं तऽ हमरा बेटा के तैयो इच्छापूर्ण नहि भेल ? अलच्छी नहि तन। सिउँथ धोकऽ डनिपन सिखलैं। डाइन कहीं के ।

शोभा– *(कनैत)* माय, हमर कोन दोष अछि। हम कोन अपराध कएलौं। किए हमरा पर एतेक अत्याचार करैत छथि। हम डाइन नहि छी माँ! हम डाइन नहि छी---।

(घूरनबाबूक संगे अभिषेक प्रवेश करैत अछि)

शोभा– *(शोभा कनैत घूरनबाबूक पैर पर खसैत अछि।)* बाबूजी हम कोन पाप केने छलहुँ। कोन अपराधक एतेक बड़का सजा हमरा देल गेल। माय, हमरा डाइन कहै छथि। *(जोड़ सँ कनैत)* हे नाथ! हमरा लय चलू।

घूरन– *(उठबैत)* बेटी,आहाँ हमर पुतोहु नहि बेटी छी। आहाँक दुःख हम बुझैत छी। कानू नहि, चुप भऽ जाउ।

कौशल्या– *(अँइठि कऽ)* आहा हा--हा--। जेहन गायके दूध नहि तेहन अनुराग बड़ भारी। अइ मौगी कें एखने बापक घर पहुँचा दियौ। हमरा बेटा के खा लेलक, एकरा देखिकऽ जे उठत तकरा अन्जल नहि हेतै।

(केबार लग रूसि कऽ बैस जाइत)

घूरन– *(तमसाइत)* अवधेशक माय! आहाँ चुप रहब कि नहि ?

कौशल्या– नहि चुप रहब तऽ की करब ? एहि राँड़ीक पक्ष लय कऽ हमरा मारब?

घूरन– *(हाथ उठबैत)* आहाँ एतऽ सँ जाएब कि नहि ?

कौशल्या– *(कनैत)* जाइ छी, मुदा अइ कलमुँही के एकदिन हम देखा देबै। इएह रहत कि हमहीं रहब।

(घूरनबाबू अवाक रहि जाइ छथि। अभिषेक शोभा सँ लपटि जाइत अछि आ आँगन दिश चलि जाइ अछि।)

मनटून– *(नेपथ्य सँ)* घूरनबाबू छी ओ ?

घूरन– हँ हँ हँ ! आउ आउ।

मनटून– *(प्रवेश)* संगे नेताजी सेहो छथि। आउ नेताजी! घूरनबाबू अपनहि छथि।

नेताजी– *(प्रवेश)* की खबरि अछि घूरनबाबू ?

घूरन– *(दुःखी)* हमर की खबरि रहत। ने जीबै छी ने मरै छी। नरकक भोग लिखल अछि।

नेताजी– कष्ट तऽ बड़ भेल। भगवानो नीके लोक के फेरी लगबैत छथिन्ह। पूरा पंचायत अन्हार भेल अछि। के नहि कनैत अछि। जकरा सँ गप्प होइत अछि एतबे मुँह सँ खसैत छै। एतेक नीक लोक कहल नहि जाय। ककरो सँ कहियो मुहाँ टुठ्ठी नहि। सबहक आँखिक तारा छल ओ *(आँखि पोछैत)* बिसरू घूरनबाबू की कऽ सकैत छी , जीवन आ मृत्यु पर ककरो जोड़ नहि चलैत छै।

घूरन– *(आँखि पोछैत)* करेज पर पाथर राखि जीवि रहल छी। भगवान हमरा कियैक नहि उठा लेलन्हि। *(सिसकैत)*

नेताजी– बेकार एना कनला सँ की फैदा। जकरा जाहि दिन जेबाक छै जेबे करत। हम आहाँ कतबो कानब, जाय बला नहि

रुकत। आब बिसरू ई सब बात। ओ आहाँक बेटा नहि छल, चलि गेल। ओहि जन्मक ऋण खेने छलियैक, सधा देलियै।

मनटुन– जे हेबाक छल से भेल। हमरा नहि कष्ट होइत अछि की ? हमर कुटमैती कयल छल। ओ कन्या हमर सारक बेटी अछि। जे चल गेल तकरा बारे मे सोचनाइ छोड़ि जे छथि तकर कष्टक चिन्ता करू जे दिन कोना कटतैक ।

(नेताजी मनटुन कें आँखिक इशारा दैत ।)

नेताजी– ठीके कहि रहल छथि मनटुन बाबू। बिसरले सँ कल्याण अछि। घूरन बाबू , हम जे एखन एलहुँ तकर कारण मुखिया चुनाव अछि। हमर पार्टी विचार केलक अछि जे अइ बेर उम्मीदवारक परचा अहींक पुतोहु भरइथ। महिला नेतृत्वक बड़ महत्व होइ छै। कनियाँ पढ़ल लिखल छथि। एहि सब मे रमलाक बाद धीरे-धीरे पुरना सब बात बिसरि जेती।

घूरन– नहि नेताजी, हम असमर्थ छी। एखन कनियाँक स्थिति ठीक नहि छनि। ओ एखन अइ लैन मे नहि जेतीह।

कौशल्या– *(केवार लग सँ)* किएक रोकैत छियै ? जाए ने दियौ जतऽ जेतै। आब ओकरा करबाक की छै अहि जीता जिनगी मे।

नेताजी– ठीके कहलनि घूरन बाबू। कनियाँ लेल एकटा नीक सुयोग भेटि रहल अछि।

घूरन– नहि-नहि, एहि सभ बातक लेल हमर मोन नहि मानैत अछि।

(दीपकक प्रवेश। हिनका लोकनिकें देखि आश्चर्यित होइत अछि)

मनटुन– लिअ। आबि तऽ गेलाह अइ घरक मालिक। ई जे करता सैह हैत अइ घर मे।

घूरन– ठीके कहलौं अइ मामला मे दीपककऽ निर्णय अन्तिम हएत।

दीपक– किएक ? एहन कोन बात छै जे हमरा निर्णयक प्रतीक्षा भऽ रहल अछि।

घूरन– मुखिया चुनाव मे अपना पार्टी दिश सँ कनियाँ कें टिकट देबाक विचार सँ आएल छथि।

दीपक– ओ,बिना कारणे कतौ टिटही लागै। एक बेर दुखक घड़ी मे हमरा फँसाबऽ आयल रही। ओ तऽ धनकें इन्सपेक्टर साहेब जे हमरा पर विश्वास केलैन्ह नहि तऽ आहाँ सब अवधेशक मृत्यु पर हमरा हथकड़ी लगबैत रही।

मनटुन– ध्यान राखू दीपक, आहाँ नेताजी सँ बात कऽ रहल छी। कोनो एहन एरू गैरूक संग नहि।

दीपक– हमरा पूरा ध्यान अछि जे हम नेताजी सँ बात कऽ रहल छी। नेताजी कोनो कल्लाऽ पहाड़ नहि छथि। हम सोचैत छलहुँ आहाँ सब घाव पर मलहम पट्टी करए आयल होएब परन्तु आहाँ सब घाव पर नून छीटऽ आयल छी।

कौशल्या– तों चुपकर। आब संगी मरि गेलौ। आब की जूति चलबै छैं। हम कहै छियै कनियाँ ठाढ़ हेती।

नेताजी– *(प्रसन्नता सँ)* वाह! वाह! आहाँ एहन घोषणा कऽ हमरा सबहक मान मर्यादा कें ऊँच केलहुँ ताहि लेल हम सब आहाँक आभारी छी। आब एखन चलै छी।

दीपक– रुकू नेताजी। ई झगड़ा लगा कऽ कतऽ चललौं ? सूर्य भलेही दिशा बदलि देत मुदा शोभाजी चुनाव नहि लड़ती से नीक सँ जानि लिअ।

नेताजी– आहाँ के होइ छी अइ घरक आन्तरिक मामला मे दखल देनिहार। घूरन बाबू करताह। हुनक पुतोहु छियैन्ह।

मनटुन– हमरा सारक बेटी छथि। हमरो एतऽ अधिकार अछि।

दीपक– एक बेर कहि चुकलौं। ई मुँह जे बाजि देलक सएह हएत। हुनका राजनीतक नर्क मे लऽ जाकऽ शोषण नहि करिऔन।

नेताजी– ई सब हुनके हित लए क़एल जा रहल छथि।

दीपक– झूठ बजै छी आहाँ। आहाँ अपना स्वार्थक वास्ते कऽ रहल छी। आहाँ सब एखन चलि जाउ अन्यथा हम आरो किछु कहि सकैत छी।

नेताजी– घूरनबाबू , आहाँक दलान पर हमर एतेक बड़का बेज्जती ? हम बर्दास्त नहि करब। भजेन्द्र मुखियाक बेटा दीपक कान खोलिकऽ सुनि लिअ। ई चैलेन्ज बहुत भारी पड़त। नेताजी सँ टक्कर बड़ मँहग पड़त।

मनटुन– पसाही लेसि देलियै दीपक। सबसँ पहिने आहाँ अपने जड़ब।

दीपक– कौआ सरापे बेंग नहि मरैत छै।

मनटुन– गहुमनक काटल बचबो नहि करै छै। *(नेताजी संगे प्रस्थान)*

दीपक– देखि लेबै। *(कौशल्या सँ)* काकी, कनिक सोचू , आहाँ अपन पुतोहु संगे एना किए कऽ रहल छी ? ओकरा राजनीतिक राक्षसक हाथ मे किए ठेलऽ चाहैत छियै?

कौशल्या– *(उठिकऽ चलि जाइत अछि)*

दीपक– हमर बात अधलाह लगैये मुदा हम आहाँ सबहक अनिष्ट सोचियो नहि सकै छी। हमरा ऊपर बोझ अछि। अनजान मे भेल गलतीक प्रायश्चित्त करक अछि। मित्र के देल वचनक पालन करक अछि। शोभा भौजीक जीवन मे खुशी तऽ नहि आनि सकै छी मुदा ककरो कुटिल चालिक उत्तर दऽ सकै छियै।

घूरन– आहाँ जे निर्णय लेलौं से ठीक लेलौं दीपक।

दीपक- मित्र के बाद हमर अधिकार नहि ? *(उदास बैसि जाइत अछि)*

घूरन- अवश्य अछि। हुनका बातक दुख नहि करू। *(सान्त्वना दै छथि)*

****



नेताजी एवं मनटुन

अंक : तेसर

दृश्य : दोसर

(मंदिरक प्रांगण । रात्रिक समय । नेताजी आ मनटुन बात करबाक मुद्रा मे)

नेताजी- मनटुनबाबू ! आब हम स्वयं चुनाव मे पर्चा भरब। देखै छी हमरा के हरा दैत अछि। लोक नेताजीके नहि चिन्हलकए। नेताजी कोन ज्वालामुखीक नाम छै से नै जनैए। देखै छियै के टकराइत अछि हमरा सँ।

मनटुन- एतेक आवेश मे जुनि आउ। धैर्य सँ काज लिअ नेताजी, धैर्य सँ। जौ हमर बात मानी तऽ कही।

नेताजी- आहाँ की सलाह देबऽ चाहैत छी? जल्दी बाजू *(आवेश सँ)*

मनटुन- एना हड़बड़ाउ जुनि। हड़बड़ेला सँ काज खराब भऽ जाइत छै। उपाय एहन सोचक अछि जाहि सँ साँपो मरए आ लाठियो नै टूटए।

नेताजी- बजबो करब कि खाली भूमिका सुनाएब।

मनटुन- देखियौ नेताजी, आहाँके घूरन बाबु सँ बदला लेबाक अछि। भजेन्द्र चौधरी के पटकनियाँ देबाक अछि। भावी मुखिया दीपक चौधरी के छवि बिगाड़ि देबाक अछि। एतेक केंलाक बाद मुखियाक कुर्सी हथियेबाक अछि।

नेताजी- हँ यौ बिल्कुल ठीक कहलियै। एतेक जे लकठक जोड़, तोड़-मरोड़ कऽ रहल छी से मुखिया के कुर्सी हथियेबाक लेल किने ?

मनटुन- बस, अहि सब बीमारीक एकेटा दवाइ अछि। ओ अछि स्वर्गीय अवधेशक घरवाली।

नेताजी- स्वर्गीय अवधेशक घरवाली ? फेरो वैह चर्चा करैत छी।

मनटुन– पहिने हमर बात तऽ सुनु। ओइ विधवा संग दीपक चौधरीक अबैध सम्बन्धक गुलछर्रा उड़िया दियौ। देखियौ ने काल्हि सँ घूरन बाबू के लोक थू–थू करबे करतनि संगे भजेन्द्र चौधरी आ ओकर बेटा दीपक चौधरी के एहन नक्शा बिगड़त जे चारू नाल चित्त।

नेताजी– मनटुन बाबू , आहाँ कमाल के आइडिया देलौं। ई बात आब करहे पड़त। बड़ चरित्रवान बनैत अछि दीपक। एके तीर सँ दू निशान।

(दुनू गोटा ठहक्का मारि हँसैत छथि)

मनटुन– नीक लोकक दुनियाँ नहि छै तैं । नीक रास्ता पर जे चलऽ लागब तऽ मांगल भीख हाथ सँ लोक छीन लेत। जे जहिना बूझाए तकरा तहिना बुझाबी।

नेताजी– ठीक छै, सगर गाम पहिने ई बात उड़िया दियौ जे ओइ विधवा संग मुखिया भजेन्द्रक आदर्शवादी पुत्र दीपक चौधरीक सम्बन्ध छै आ ओकर सबूत जुटबऽ मे लागि जाउ।

मनटुन– भजेन्द्र चौधरी सँ बदला सधेबाक अवसर हमरो भेटि जायत आ दीपक चौधरीक भविष्य गारत मे।

नेताजी– एकरा कहै छै राजनीति।

(दुनू गोटे हँसैत हाथ मिलबैत छथि)

****

अंक : तेसर

दृश्य : तेसर

(अवधेशक घर। शोभाक हाथ पैर बान्हल छै। कौशल्या मटिया तेल छिटि चुकल छै। खाली डिब्बा --हाथ मे सलाइ--आगि---)

कौशल्या– आजुक बाद ने तों रहबे आ ने एतेक नाटक हएत। हमरा खानदान मे दाग लगा देलक मुँहझौंसी। मुँहझौंसा दीपक संगे चोरानुकी खेलाइ छैं। ओकरे सँ वियाह किए नैं कएलैं ?

शोभा– *(डेराइत कनैत)* सब हमरा नचबैत अछि। हमर विवशता सँ लोक लाभ उठबैत अछि। हम गलत नहि छी। विश्वास करथु माय।

कौशल्या– तों हमरा घरके सत्यानाश कऽ देलैं। हम तोहर सत्यानाश कऽ देबौक। आ दीपक के चानि पर आगि ढाड़ि देबैक।

शोभा– हम पवित्र *(बेकसूर)* छी माय। दियर भाउजक सम्बन्ध मे कलंक नहि जोड़थु माय।

अभिषेक– *(बाहर सँ आबि, माय के हाथ पकड़ि)* माय ई की करै छैं ? एहन अनर्थ नहि कर। *(कानय लगैत अछि)*

कौशल्या– *(हाथ छोड़बैत)* भाग रे अभगला। तों एलैहें ज्ञान देबऽ । *(झीटकि दैत)*

(अभिषेक बाहर दिश हल्ला करैत– बाबूजी ..... बाबूजी .....)

शोभा– हम पैर पकड़ैत छियनि। एहन मृत्यु हमरा नहि देथु। जँ मारहेक छनि तऽ एक घोंट जहर दऽ देथु। मुदा एहन मृत्यु नहि देथु। हम कोनो पाप नहि केने छी। *(जोड़ सँ कनैत)* हे नाथ! ऐना कियै ?

कौशल्या– *(अँइठ कऽ)* आहा--हा--हा। बड़ सतबर्ती छथि ई। अनेरे सौंसे गाम मे हल्ला छै। *(सलाइ सँ काठी बहार करैत।)*

शोभा– ई प्रचार हिनकर दुश्मन सब केलकन्हि हैं। आ हमरा जड़ा देला सँ ओ सब आर बर्बाद कऽ देतन्हि।

कौशल्या– *(काठी लेसैत अछि मुदा नहि लेसाइत छै)* बरबाद त तों कएले अलच्छी। आब ने रहत बाँस ने बाजत बसुरी। दीपक के एतेक साहस, जाइ थारी मे खेलक ताही मे छेद केलक? *(सलाइ काठी लेसिकऽ आगू बढैत अछि)*

शोभा– *(भयाक्रान्त)* नहि....नहि....नहि.... *(पाछू घुसकैत अछि।)* *(कौशल्या आगू बढ़ैत अछि, शोभा पाछू हटैत अछि। अभिषेक संगे घूरन बाबूक प्रवेश।)*

घूरन– *(कौशल्या हाथ सँ सलाइ छीनि लैत एक थापड़ मारैत। अभिषेक शोभाक डोरी खोलैत)* छी: छी:। केहन कुकर्म करऽ जा रहल छी। कनेको मोन मे विचार नहि आएल। जकरा पर भगवान एहन विपत्ति देलखिन तकरा संगे एहन अन्याय?

कौशल्या– आहाँ जनै छियै। भरि गामक लोक की बजैऐ ? रास्ता नहि चलऽ दैऐ।

घूरन– हम जनै छियै। ई सबटा झूठ छै। हमर पुतोहु निर्दोष छथि। निष्कलंक छथि। मुदा आहाँ माँफ करबा योग्य नहि छी। आब आहाँके अपना करनीक सजा भोगऽ पड़त। *(तेलक डिब्बा हाथ मे लै छथि आ कौशल्या दिश बढ़ैत छथि)*

कौशल्या– नहि, हमरा माफ कऽ दिअ। हमरा बुद्धि मे व्याधि लागि गेल छल। हमरा कान फूकि देने छल । *(कपार पीटैत कानऽ लगैत अछि)*

घूरन– *(आगू बढ़ैत)* आहाँ पुतोहु के पुतोहु नहि बुझलौं। जहिया सँ ओ घर मे आयल तहिए सँ आहाँ एकरा पाछा पड़ल रहलियै। बड़ बर्दास्त केलहुँ हम। आब बर्दास्त सँ बाहर भऽ गेल छी। आइ हम जड़ाइये कऽ समाप्त कऽ देब।

शोभा– *(तेलक डिब्बा छिनैत)* बाबूजी! एहन काज नहि करथु। *(अभिषेक के डिब्बा दै छै, अभिषेक डिब्बा लऽ कऽ चल जाइ अछि)*

घूरन– देखिलियै ? जकर सत्यानाश आहाँ करै छलियै सएह आहाँके जीवन–दान देलक। एहन पुतोहु के कलंकित करै छी। पैर पकड़ि कऽ माफी माँगू अइ पुतोहु सँ।

कौशल्या– हमरा माफ कऽ दिअ कनियाँ। हमर आँखि फूजि गेल। हम अन्यायी छी, पापी छी। *(कानऽ लगैत अछि)*

शोभा– *(सासुक नोर पोछैत)* दोष हिनकर नहि, हमरा कपारक अछि। हमरा जे लिखल अछि से भोगहि पड़त। *(अभिषेक आबि कऽ शोभा सँ लटकि जाइत अछि, कौशल्या सेहो शोभा कें दुलार करै छथि।)*

घूरन– *(बैसि कऽ)* धन्य छी कनियाँ! आहाँ धन्य छी। *(कनैत)* हमर बेटा नहि अछि मुदा आहाँ हमरा बेटा सँ कम नहि छथि। हे भगवान। एहन सुशील अबला पर एते भारी अन्याय किए केलिऐ? हे भगवान!

****



बायाँ सँ – कौशल्या, अभिषेक, शोभा एवं घूरन

अंक : तेसर

दृश्य : चारिम

(भजेन्द्र चौधरीक दलान। दीपक संगे तनावपूर्ण वार्त्तालापक भाव)

भजेन्द्र- चलि जाउ, जतऽ जेबाक अछि। आजुक बाद अपन मुँह हमरा नहि देखायब।

दीपक- बाबूजी, हम बेकसूर छी। एहन कोनो अपराध नहि केलहुँ हम। सबटा मनगढ़न्त आरोप लगायल जा रहल अछि हमरा पर।

भजेन्द्र- भजेन्द्र चौधरीक खानदान मे पहिल बेर अइ तरहक दाग लगाएल जा रहल अछि। चौधरी परिवार अइ गामक ओ धरोहर छी जकरा पर ई गाम चलैत अछि। ताहि धरोहर मे आहाँ दाग लगेबाक प्रयास केलहुँ। निकलि जाउ अहि घर सँ। आजुक बाद हम बूझब मरि गेल हमर बेटा। एहन बेटा सँ हम सन्तोष केलहुँ।

दीपक- चौधरी खानदानक मान मर्यादा के हम नीक जकाँ बुझै छी। तैं हम कोनो एहन गलती नहि केलौं जाहि सँ अहि खानदान के कतौ कलंक लगै। हम गलत नहि छी। हमरा पर विश्वास करू।

भजेन्द्र- की विश्वास करू ? की ई सत्य नहि छै जे समय-समये पर घूरन बाबू ओहि ठाम आहाँ जाइत छी ?

दीपक- हँ! ई सत्य छै।

भजेन्द्र- अइ सँ वेशी सबूत इकट्ठा करैक कोन जरूरी छै। आरोप लगेनिहार लोक लेल एतबा सबूत काफी छै जतबा आहाँ स्वीकार करै छी।

दीपक- ककरो ओइ ठाम गेला सँ चरित्र खराब भऽ सकैत छै ? एसगर मे ककरो सँ बात केला सँ मर्यादा नष्ट होइ छै?

(कने रुकि) विपत्तिक मारल ओइ मसोमात नारीक प्रति हमरा हृदय मे सम्मान अछि। ओकर बैधव्य जीवन के लेल हम कतौ ने कतौ अपना कें दोषी पबै छी किएक तऽ अवधेशक जानलेवा बीमारीक पता मात्र हमरे टा छल। हम ककरो नहि कहलियै। इएह अपराध हमरा सँ भेल अछि। मुदा ओ गंगाजल सन पवित्र अछि बाबूजी!
(कानऽ लगैत अछि आ आंगन दिश चल जाइत अछि। भजेन्द्र बाबू चिन्तित देखाइत छथि। मनटुनक प्रवेश संगे सोमेन सेहो अछि)

भजेन्द्र- आउ, आउ। मनटुन बाबू , की बात छै यौ?

मनटुन- एकटा सम्बाद अनने छी।

भजेन्द्र- कहूने।

सोमेन- *(मनटुन सँ)* अहीं कहिअनु।

मनटुन- काल्हिखन कालीजीक मंदिरक प्रांगण मे बैसार हएत जाहि मे आहाँक उपस्थिति अनिवार्य। संगहि दीपक गाम सँ बाहर नहि जाथि हुनका रहब आर वेशी अनिवार्य। *(सोमेन सँ)* की हौ सएह ने?

सोमेन- हँ, सएह ने तऽ आर की?

भजेन्द्र- एकर माने आहाँ सब चक्रव्यूहक रचना कऽ रहल छी ?

मनटुन- जहन द्रौपदीक चीर हरण हेतै तहन चक्रव्यूहक रचना हेबे करतै ?

भजेन्द्र- अर्थात् दूनू काजक ठीका अहीं सब लऽ लेलौं। कने ध्यान सँ सुनू। भजेन्द्र चौधरी आइ धरि कोनो बाजी नहि हारलए। अपन दुश्मनी आहाँ घूरन बाबू सँ एना सधेबनि तकर आशा नहि छल। नेताजी अपन राजनीतक गोटी बैसाबक लेल हमरा बेटा कें मोहरा बनौता से नहि बूझल छल मुदा छल-कपटक ई गोरखधन्धा हमरा आगू नहि चलत।

अपन स्वार्थ लेल आहाँ सऽ दूटा अबोध कें बलिक बकरा बना रहल छियै तकर फल भेटत।

मनटुन– होउने ई भाषण काल्हि देबै। ककरा की होइ छै से देखबे करब। लगे दाढी पड़ोसे छूरा। चलह सोमेन।

सोमेन– चलू। *(दुनूक प्रस्थान)*

*****



बायाँ सँ – दीपक, नेताजी, मनटुन एवं शिखर

अंक : चारिम

दृश्य : पहिल

(स्थान – काली मंदिर। समय प्रात:काल। सोमेन मंदिर सँ बहराइत अछि। वीजेन्द्र अबैत अछि।)

सोमेन– की यो वीजेन्द्र! आहाँ गाम साफे छोड़ि देलियै।

वीजेन्द्र– की करब गाम पर रहि कऽ। आहाँ सब गाम के भूजऽ पर लागल छी।

सोमेन– गाम मे रहितहुँ तहन ने बुझितियै। समाजसेवी बनल फिरल छी। देखबै ताल आइ सांझ मे।

वीजेन्द्र– हँ, देखऽ लए तऽ एबे करब। देखब जे केहन पंचैती आहाँ सब करैछी *(जाइत अछि)*

सोमेन– एना किए पड़ैल जाइ छी। चाह दोकान तक हमहूँ संग देब। परदेशियाक चाह कहाँदन बड़ मीठ होइ छै ।

(दुनू गोटाक प्रस्थान। पाछू सँ शोभा पूजा करऽ अबैत अछि। मन्दिर सँ पूजाकऽ कऽ जाय लगैत अछि कि दीपकक प्रवेश।)

दीपक– भौजी, कने रुकू। आहाँ सँ किछु बात करबाक अछि।

शोभा– परन्तु हम आहाँ सँ बात नहि करय चाहै छी।

दीपक– किए ?

शोभा– से आहाँ जनैत नहि छियै ?

दीपक– हमरा आहाँ बीचक सम्बन्ध मंदिर मे बैसाओल पाथर जनै छथि।

शोभा– *(हाथ जोड़ि)* चलि जाउ एतऽ सँ। हमर कोन कसूर अछि जे हमरा माथ पर कलंकक टीका लगबै छी।

दीपक– ई बात आहाँ मुँह सँ निकलि रहल अछि ? अहि सँ साफ अर्थ निकलैत अछि हम गलत छी।

शोभा– आहाँ के लगै छी हमर ? दोस्त छलथि हमर स्वामी। हुनका संगे अहूँक सम्बन्ध समाप्त भऽ गेल। फेर हमरा सँ बात केनाइ तऽ दूर, हमरा दिश तकनाइओ अनुचित हएत।

दीपक– किए ? आहाँ की बुझै छी जे दीपक एकटा नीक विचारक लोक नहि अछि ? आहाँ सोचैत छी जे आहाँक कमजोरी सँ हम लाभ उठबऽ चाहैत छी ? नहि, हमर ध्येय एहन छोट नहि अछि। आहाँ हमरा भूल बूझि रहल छी।

शोभा– तहन हमरा पर उपकार किए करए चाहै छी ? हमरा लेल अपना के बदनाम किए करै छी ? हम की करब नहि करब तकर चिन्ता आहाँ किए करै छी?

दीपक– हमरा सँ एकटा भूल भेल अछि तैं। ई जनैत जे अवधेश ब्लड कैंसर सँ पीड़ित अछि, ओ बेसी दिन नहि जीत, हम एहि बात कें गुप्त रखलौं। तकरे परिणाम भेल आहाँक वर्तमान ई स्थिति।

शोभा– अहि मे आहाँक कोन दोष ? हमरा भाग्य मे जे छल से भेटल।

दीपक– आहाँक भाग्य नहि। एकर उत्तरदायी हम छी। हम अपना कें अपराधी बुझै छी। इएह अपराध – बोध छटपटाहटि मे राखि देने अछि। हमरा जे सजा देब से दिअ।

(नेताजी गरा मे केमरा लटकओने चोरा कऽ फोटो लेमऽ क्रम मे)

शोभा– हम स्वयं सजा भोगि रहल छी। हम एहन कलंकित जिनगी नहि जीवऽ चाहै छी ?

(शोभा मंदिरक देवाल पर कपार पटकक मुद्रा मे) हे नाथ! हम कियैक जीवैत छी ? हमरो लऽ चलू। हमरो लऽ चलू।

(दीपक शोभा कें पकड़ैत। एही समय नेताजी फोटो लऽ लैत अछि)

दीपक– पागल जकाँ नहि करू। अपन जान देबऽ चाहैत छी ? एकटा आहाँक जान देलाक बाद कि संसारक विधवा के कल्याण हेतै ? परिस्थितिक सामना केनाइ सीखू । आत्महत्या कोनो समस्याक समाधान नहि छै ।

शोभा– हमरा लग कोनो दोसर रास्ता नहि अछि। एसगर हम कतेक लोकक मुँह मे झीक देबै। हमरा लेल अइ संसार मे कियो नहि अछि।

दीपक– अछि, बहुत लोक अछि। जौं चिन्हि सकियै तऽ चीन्हू। हमरा सँ आहाँ के कष्ट भेटल ताइ लेल दु:खी छी। आजुक बाद हम आहाँ सोझा नहि आएब। हमरा सँ जे अपराध भेल तकरा क्षमा करब।

(दीपक जाए लगैत अछि। शोभा हाथ पकड़ि लै छै। नेताजी फेर एकटा फोटो लऽ कऽ चल जाइ छथि।)

शोभा– समाजक सोझाँ लांछित जीवन व्यतीत करबाक साहस हमरा मे नहि अछि।

दीपक– कोना बुझै छियै ? अपना शक्ति के जगाउ। सत्य–पथ पर चलऽ वला के डर कथीक। अपना के कमजोर नहि बनाउ। अइ समाजक राक्षस सँ लड़बाक शक्ति हम दै छी।

शोभा– की शक्ति हमरा देब। हम टुटि चुकल छी। आहाँ पर भरोस छल मुदा आहाँ संगे हमर नाम जोड़ि कऽ ई समाज हमरा आत्महत्या करबाक लेल बाध्य कऽ देलक।

दीपक – ओकरे सबके मुँहतोड़ जवाब देबाक छै। जौं आहाँके हमरा पर विश्वास अछि, हमरा सच्चरित्रता पर आस्था अछि तऽ हे लिअ *(अपन दहिना हाथ बढ़बैत)* एकटा प्रेम आ स्नेहक बन्धन अहि हाथ पर बान्हि दिऔ।

शोभा– *(आश्चर्य एवं विह्वलताक संग)* दीपक! आहाँ महान छी। आहाँ देवता छी। हमरा भ्रम होइ छल। भगवती हमरा आहाँक परीक्षा लेलनि। हम सब सफल भेलहुँ।

(शोभा आँचर सँ एकटा सूत बंहार कऽ दीपक के हाथ मे बान्हि दैछ। पूजाक थारी सँ चानन लय ठोप कऽ पैर छूबि कऽ प्रणाम करैछ।)

शोभा+दीपक– *(भगवतीक सोझां ठाढ़ होइत।)* हे माँ हमरा सबकेँ शक्ति दिअ। आत्मबल दिअ। अन्यायके विरुद्ध लड़बाक साहस दिअ।

*****



शोभा एवं दीपक

अंक : चारिम

दृश्य : दोसर

(मंदिर पर पंचायत सभा। सतरंजी पर किछु ग्रामीण। चबूतरा पर मनटुन, नेताजी एवं सोमेन फुसफुसाइत। एक दिश घूरन, वीरेन्द्र आ दीपक तमसाएल बैसल छथि।)

सोमेन– मुखियाजी एखन धरि नहि एलाह। हम सब एहिना बैसल रहब की ?

मनटुन– थोड़े काल आर देखि लियौन ओना नहि अओताह तऽ कोतवाल के पठा कऽ बजाबह पड़त।

गजेन्द्र– *(तमसायल प्रवेश)* एतेकटा दुस्साहस। जवान पर कोनो लगाम नहि।

नेताजी– किए तमसाइत छी मुखियाजी! चमड़ाक मुँह छै कखनो पिछड़ि जाइ छै। आउ बैसू।

(चबुतरा पर मनटुन जगह दै छन्हि। अपने सतरंजी पर बैसि जाइ छथि)

सोमेन– तहन शुरू करी।

नेताजी– हँ! हँ!

सोमेन– गामक एकटा मर्यादा होइ छै जे सामाजिक व्यवस्था पर चलैत छै। प्रत्येक परिवारक अपन सम्मान होइ छै। गरीब हो वा अमीर। इज्जति-प्रतिष्ठा सबके समान होइ छै। कोनो गरीबक इज्जति धनिकौतक बल पर लूटि लेनाइ अन्याय होइ छै।

वीजेन्द्र– अरे असली बात पर आउन्ने। झूठे के की भूमिका बान्हय लगलौं।

सोमेन– कने शान्त रहू। सबटा खोंइचा छोड़ाकऽ कहै छी। किछु समाज विरोधीबल गामक शान्ति व्यवस्था के भंग करऽ

चाहैत अछि। हमरा लोकनिक एकता के खण्डित करऽ चाहैत अछि।

वीजेन्द्र– यौ अनेरे की भाषण केने जाइ छी। ई चुनावी सभा नहि छै। मुद्दइ आ मुद्दालहक बात करू ने।

सोमेन– सएह तऽ कहै छी। मुद्दइ छथि घूरन काका आ मुद्दालह दीपक चौधरी।

वीजेन्द्र– की यौ घूरन काका ? आहाँ पंचैती बैसौलहुँ हैं ?

घूरन– *(करुणा स्वर मे)* नहि हौ बाउ। हमरा तऽ नेताजी बजौलनि। कहलनि आहाँ पर पंचैती हएत।

वीजेन्द्र– ओ, ई पंचैती नेताजी बैसओलनि। की यौ नेताजी ?

नेताजी– अवश्ये किने ? सामाजिक व्यवस्था मे उत्पन्न अवरोधक निवारण करब हमरे सबहक जिम्मेदारी अछि ने ?

वीजेन्द्र– *(हँसैत)* वाह रे वाह। धिया–पुता ककरो, घी–ढाढ़ी करए मँगरो।

मनटुन– वीजेन्द्र! तों बात के बहका कऽ कतऽ लऽ जाए चाहै छहक। तोरा किछु बुझल छह ? गाम मे की ताल सब भऽ रहलए ?

वीजेन्द्र– हँ यौ, बुझल अछि।

सोमेन– *(खौंझाइत)* कटहर बुझल अछि। अनेरे फटर–फटर करै छथि।

वीजेन्द्र– *(ढाढ़ भऽ)* देखू सोमेन! ताव देखाबऽ हमरो अबैयाए।

नेताजी– आहाँ दूनू गोटा चुप भऽ जाउ। हम अपने सबटा बात कहै छी। बन्धुगण! आइ जे पंचैती लए जुटल छी से अछि चारित्रिक अपराध। घूरन बाबूक मसोमात पुतोहुक संग मुखियाजीक बेटा दीपकक अनैतिक सम्बन्ध। जे भरिगाम गुलगुला रहल अछि।

दीपक– ई मिथ्या आरोप थिक। षड़यन्त्र थिक।

मनटुन– हम खूब बढ़ियाँ जकाँ जनै छी जे दीपक के ओइ घर मे चिनमार धरि प्रवेश छै वा बना लेने अछि। किएक तऽ घूरनबाबूक पुतोहु हमरा सारक बेटी अछि तैं हमरो ओतऽ अवरजात रहैयाए। जखन – तखन दीपक के ओहिठाम उपस्थित देखलियैयाए।

भजेन्द्र– कतौ ककरो उपस्थिति ओकर अपराध होइ छै ?

नेताजी– अकारण उपस्थितिक प्रयोजन की ?

सोमेन– मसोमात सँ एकान्त मे-----

वीजेन्द्र+दीपक– सोमेन !

वीजेन्द्र– ककरो इज्जति के सरेआम बदनाम करबाक अधिकार ककरो नहि होइ छै से ध्यान राखू। दीपकक चरित्रक बारे मे सब कियो जनैत छी। संगहि घूरनबाबूक पुतोहुक सेहो। पर्दाक बात पर्दा मे रहए से मर्यादा भेल।

भजेन्द्र– शाबास वीजेन्द्र।

घूरन– हमरा इज्जतिक रक्षा करै जाइ जाउ। भगवानक डाँग सँ हम अधमरू भेल छी। आब कतेक मारै जाइ जाएब।
(कानऽ लगैत छथि)

वीजेन्द्र– सबहक मालिक भगवान छथिन्ह। एहिठाम कालीजीक मंदिर छै। ओ सबटा देखै छथि। आहाँ घबराउ नहि।

मनटुन– *(नेताजी सँ)* देखियौ नेताजी! चोर–चोर मसियौत भाए।

नेताजी– चोरक शागिर्द सेहो नहि ने बाँचए।

सोमेन– बुझाइए जेना अइ लटपट मे दूनू बरोबरि के हिस्सेदार छथि। आखिर मौगी चीजे सएह होइत छै। ताहू मे जवान मसोमात।
(हँसऽ लगैयाए)

वीजेन्द्र– मुँह सम्हारि कऽ बाजू सोमेन। हम बर्दास्त करै छी तैं कमजोर नहि बुझी।

सोमेन– आहाँ कथी उखारि लेब?

वीजेन्द्र– देखा दिअ। देख लियौन आहाँ सब। हम छठियारक दूध मोन पाड़ि देबनि *(दुनू गोटा मारि लेल आमने – सामने भऽ जाइ छथि। नेताजी हटबै छथि)*

नेताजी– सोमेन! आहाँ झगड़ा बढ़ा कऽ हमरा सबहक काज मे बाधा दैत छी। *(दूनू के हटाकऽ भजेन्द्र सँ)* मुखियाजी! ई केश आहाँ बेटा पर लागू अछि तैं आहाँकें सेहो जवाब देबऽ पड़त।

भजेन्द्र– नेताजी! हम मुखिया छी आ एहन–एहन पंचायत के हम बुढ़ियाक फूसि मानै छी। आहाँ झूठक नाटक केने छी। झूठक मुकदमा बनाबऽ मे सेहो अकिल के काज पड़ैत छैक से तऽ आहाँ बेचि लेने छी।

नेताजी– एतेक सस्ता जुनि बूझू। सजा अहीं के सुनाबऽ पड़त, हम तऽ प्रमाण देखा कऽ सिद्ध कऽ देब जे आहाँक बेटा केहन दुश्चरित्र अछि।

भजेन्द्र– बस करू। हमरा बेटा पर गर्व अछि। आ वीरेन्द्रक सोच विचार पर मुग्ध छी। इएह सब समाजक कल्याण कऽ सकैत अछि। दीपक पर हमरा पूरा विश्वास अछि। ओ एहन गलत काज कइए ने सकैऐ।

मनटुन– अपन टेटर लोक के नहि सुझै छै। मुखियाजी अपन बेटाक दोष आहाँ कोना देखबै ? दोष हम देखायब।

भजेन्द्र– आहाँ की देखाएब। आहाँ सब कोन खेतक मुरइ छी। हम सबटा बुझि गेलहुँ। तहन पंचायत मे कोनो दम नहि अछि। हम जाइ छी। *(उठि जाइत छथि)*

नेताजी– बेटा के फाँसी पर छोड़ि कऽ जा रहल छी?

भजेन्द्र– नहि यौ। आहाँ सब लेल ओ एसगरे काफी अछि। *(चलि जाइ छथि)*

मनटुन– *(हाक दैत)* सुनि लिअ मुखियाजी!

नेताजी– जाए दिऔन। बेटाक कुकर्म सुनैत की नीक लगतनि।

धूरन– हमरा बकसि दिअ नेताजी। हमर प्राण छूटि जायत। एहन कलंक हम नहि सहि सकब। हमर पुतोहु गंगा सन पवित्र छथि। हुनका कलंक नहि दिऔन। अबलाक श्राप सँ डरू। हे महादेव!

मनटुन– जे दाग लगौलक तकरे तऽ हम सब सजा देबऽ चाहै छी।

दीपक– एहन कलंक लगओनिहार के सजाए अवश्य भेटक चाही आ भेटत। भगवानक घर सबहक हिसाब छैक। हुनका घर देर छन्हि अन्हेर नहि। एती काल हमहूँ चुप छलौं। पिताजीक सोझाँ शिष्टाचारक निर्बाह करबाक हेतु हमरा सबकिछु सुनऽ पड़ल छलए। आब हम एक–एकटा पोल खोलिकऽ राखि दैत छी।

सोमेन– एतीकाल चुप रहिकऽ सबटा सोचै छलैं जे अपना बचाव मे की कहबै।

दीपक– आहाँ सब अपन बचाव सोचू। हम ओइ निष्कलंक नारी कें सम्मान करै छियै आ करैत रहबै।

नेताजी–– अर्थात् ओकरा प्रति आहाँक आकर्षण स्वत: सिद्ध अछि।

सोमेन– आर अइ सँ वेशी की कहत ? कहि देलक। स्पष्ट कहि देलक जे सम्मानक चद्दरि तऽर प्रेमक आलिंगन।

दीपक– हद सँ वेशी भेल जाइए सोमेन। *(कब्जा पकड़ि लै छै)* अन्टसन्ट बाजब त गुड्डी उड़ा देब। एखन हमर पिताजी नहि छथि जे डर हएत।

मनटुन- *(छोड़बैत)* दीपक आहाँ जबर्दस्ती कऽ रहल छी। जुटल समाजक बीच एक गोटा पर हाथ उठाबऽ चाहै छी।

दीपक- कोन समाजक बात आहाँ करैत छी यौ ? जे समाज बिनु बात बुझने हमरा बदनामीक माला पहिराबऽ चाहैत अछि ? कोन समाजक बात करै छी ? जे समाज आन्हर बनि एकटा पवित्र नारी कें चरित्रहीन सिद्ध करऽ चाहैत अछि। घृणा भऽ गेल हमरा आहाँक अइ ढोंगी समाज सँ। आहाँक सरबेटी छथि। अपन बेटी आ सरबेटी मे कतेक फड़क ?

नेताजी- ई बेकारक बहस भऽ रहल अछि। सब अभियुक्त अपना कें निर्दोष साबित करऽ चाहैत अछि। पंचायतक अमूल्य समय नष्ट भऽ रहल अछि।

दीपक- चुप करू नेताजी। जे घटना घूरन काका परिवार मे घटल से घटना जँ आहाँ संगे घटि जाए तऽ की करब ? ई एकटा नारी जातिक समस्या छै। आदिकाल सँ शोषित नारी आब पुरुषक समान समाज मे अधिकार रखैत अछि। एकटा पुरुष सँ बात करब चरित्रहीनता नहि होइ छै।

मनटुन- देखू ! की केला सँ की हएत ई बात हमरा सबहक पुरखा तय कऽ चुकल छथि। मसोमात के पुरुषक छाया सँ दूर रहक चाही। अइ मे कोनो संशोधन के प्रयोजन नहि छै।

दीपक- जौं अइ मे संशोधन नहि हएत तऽ अपना स्वार्थ लए बेटाक विवाह मे टाका किए गनबै छी ? बेटा-बेटीक विवाह शहर मे किए करबै छी ? महफाक बदला मारूति पर द्विरागमन किए करै छी ? *(मनटुन सँ)* कहू ई सब काज आहाँ अपना बेटा विवाह मे केलौं कि नहि ? ई आहाँक पुरखा कहि गेल छथि ?

वीजेन्द्र- ठीक कहै अछि दीपक। जाइ संस्कृतिकें बचेबाक छल तकरा छोड़ि देलियै आ जे हमर अपन नहि छल तकरा अपनौने गेलियै तखन अपना के मठाधीश कहै छियै।

नेताजी- अहि तरहें बात बनओला सँ अपराध कम नहि हएत। आहाँ के जे किछु कहबाक छल कहलौं आर किछु कहबाक अछि ?

दीपक- हँ आब अन्तिम बात कहबाक अछि। जे स्वयं चरित्रहीन हो से दोसरो के चरित्रहीन कहबे करए। नेताजी समाजक प्रमुख। भूजनी बलात्कार काण्डक प्रमुख अभियुक्त। केश चलिए रहल छनि। पत्नीक मृत्युक बाद अपना सँ आधा उम्रक कन्या सँ विवाह केलनि आइ न्यायाधीश बनल छथि। सब खेल पाइ पर चलै छनि। सच के झूठ। झूठ के सच। हिनकर पंचैती के करत ?

मनटुन- दीपक ! नेताजी के बारे मे किछु बाजऽ सँ पहिने लोक के सोचऽ पड़ै छै ?

दीपक- आहाँ के सोचऽ पड़त। किएक तऽ अहूँ के भोगनी बलात्कार काण्ड मे पाँच सालक सजा के नेताजी तीन साल करौने छथि तैं आहाँ पंचैतिया कहबै छी।

(नेताजी आ मनटुन एक - दोसर के देखैत छथि)

वीजेन्द्र- नेताजी मुँह किए चुप केने छी ? किछु बजियौ। हम भने गाम सँ दूर रहै छी नहि तऽ आहाँ सबहक किस्सा सँ एकटा फिल्म बनि सकैयाए।

नेताजी- फालतू बहस के छोड़ू हम अपन निर्णय सुनबैत छी। हमरा लग सबूत अछि जे अवधेशक विधवा पत्नी संग दीपक चौधरी यदा-कदा घर वा मंदिर पर अनैतिक मिलन होइत रहलनिहें। अनैतिक सम्बन्धक पराकाष्ठा पर पहुँचि दीपक आइ विधवाक शोषण कऽ रहल छथिन्ह।

घूरन- ई सब झूठ छी। *(मनटुन सँ)* आहाँ किएने बजै छी यौ ? दीपक हमर बेटा बनि ढाढ़ भेल अछि। आहाँ सब बदनाम कऽ रहल छी। हे महादेव!

सोमेन- ई तऽ आहाँक सुनाम भेल। एकटा बेटा मुइल आ दोसर बेटा ठाढ़। बेटा के बेटा आ कनियाँ के वर।

दीपक- *(सोमेनक गट्टा पकड़ि)* खबरदार सोमेन। आब हम तोरा नहि छोड़बौ।

(दुनू गोटा मे हाथापाहि। लोक सब छोड़ाबक प्रयास करै अछि।)

सोमेन- तोरा हम छोड़ि देबौ ?

नेताजी- आहाँ सब मारि किए करै छी ? शान्त रहू। एखने दूध के दूध पानि के पानि भए जाएत। के दोषी अछि आ के नहि। बहुत भए गेल बहस। हमरा होइ छल अपराधी अपने अपन अपराध स्वीकार कऽ लेत। मुदा से नहि। मनटुनबाबू, निकालू सबूत। देखा दियौ सबके। दीपक आ मसोमातक लीला।

वीजेन्द्र- हँ देखाउ। की सबूत बहार करै छी।

मनटुन- *(फोटो बहार करैत)* हे इएह देखू प्रमाण। दीपक अपना दुनू हाथ सँ मसोमात कें पाँज मे लेबाक प्रयास करैयाए। अइ सँ बढ़ि कऽ की प्रमाण चाही।

घूरन- *(कपार पीटैत)* हे भगवान! ई की सुनि रहल छी ? कोन पापक फल हमरा दऽ रहल छी। *(कानऽ लगैत)*

(स्तब्धता। नेताजी, मनटुन आ सोमेन एक दोसर के मुसकैत देखैत। दीपक अवाक्। वीजेन्द्रक दृष्टि नेताजी आ दीपक पर संदेहात्मक।)

वीजेन्द्र- कने फोटो हम देखि सकैत छी ?

मनटुन- नहि! आहाँक इच्छा की प्रमाण नष्ट करबाक अछि ?

सोमेन- आब आएल उँट पहाड़ के नीचा। भाइ लोकनि। आब कहू एहन चरित्रहीन के कोन सजा देल जाए ? मुँह मे कारी चून लगा कऽ गदहा पर चढ़ा देल जाए। आ सौंसे गाम घुमाएल जाए ?

दीपक- अहि मे आहाँ सबहक कोनो प्रपंच अछि। ई फोटो हमरा देखऽ दिअ तऽ हम कहि सकैत छी, ई कोन स्थितिक फोटो अछि। आहाँ सब जे अर्थ लगा रहल छी तकर विपरीत एकर अर्थ भऽ सकैत छै।

नेताजी- आब फटर-फटर केने काज नहि चलत। मनटुनबाबू लाउ रस्सा आ बान्हू अइ नड्टा के नहि तऽ कहीं भागि जायत।

वीजेन्द्र- जौं ई सत्य छै तऽ निश्चित रूपें ई पैघ अपराध छै मुदा दीपक सन युवक कें एहन काज ? हमरा सन्देह बुझाइत अछि।

मनटुन- आबो संदेह अछि। रस्सा मे बान्हि कऽ काँच करची सँ एकर सौंसे देह दागि देल जाए।

सोमेन- मुँह की तकै जाइ छी। अन्यायी अछि। पापी अछि। मारू एकरा।

(सोमेन रस्सा लऽकऽ बान्हऽ जाइत अछि)

(तखने अभिषेकक संग शोभाक प्रवेश। अभिषेक लाठी मंदिरक पाछा चोरा कऽ राखि अबैत अछि।)

शोभा- थम्हू। बन्न करू नाटक। आहाँ सब हमरा चरित्रहीन साबित कऽ कऽ अतिप्रसन्न भऽ रहल छी। धन्य छी आहाँ सब। पुरना दुश्मनी सधा रहल छी आहाँ सब सेहो एतेक निम्नस्तर पर। छी! छी!

सोमेन- चुप भऽ जाउ। आहाँ तऽ आर जूलुम केलहुँ।

शोभा– चुप भऽ कऽ सुनैत रहू । की बिगाड़लक ई नवयुवक ? हमरा सन अभगलीक जीवन मे खुशी आनऽ चाहलक सएह ने ? आहाँ सबहक सेवा हम नहि केलहुँ से भेल हमर अपराध ?

नेताजी– आहाँ मर्यादा सँ बाहर जा रहल छी।

शोभा– मर्यादा ? मर्यादाक परिभाषा आहाँ सनक लोक की बूझत। आहाँ सबहक सोझाँ अनुनय विनय कऽ कऽ की हएत। कसाईक सोझाँ एकटा बकरी अपन जानक भीख माँगि कऽ की पाओत ? दीपक संगे हमर सम्बन्धक समस्या ओते नहि अछि जते आहाँ सब अपन पुस्तैनी दुश्मनी सधाबक लेल हमरा दुनू गोटा के मोहरा बनेलहुँ। हमरा कारण दीपक एतेक अपमान सहि रहल अछि, आब हमरो बर्दास्त नहि अछि। लिअ! आहाँ सबहक सोझाँ हम अपन जीवन समाप्त कऽ कऽ आहाँक समस्या समाप्त कऽ दै छी।

(माहुर के शीशी निकालि खाए चाहैत अछि। दीपक देखि कऽ छिनि लैत अछि।)

दीपक– बहिन!

शोभा– भैया।

(सब कियो आश्चर्य सँ देखैत अछि)

दीपक– *(हाथ पर बान्हल सूत देखबैत)* हमरा हाथ मे राखी अही लेल बन्हलौं ? अइ अपाहिज समाज सँ हारि मानि लेलहुँ ? आत्महत्या कायरता होइ छै।

शोभा– एकटा निस्सहाय अबला की कऽ सकैत अछि भैया ? एतेक अपमानित जिनगी कोना जीबि सकैत छी ?

घूरन– *(जोशमे ठाढ़ होइत)* आहाँ जीब कनियाँ। मूड़ी उठा कऽ

जीब। हमरा आँखिक जाली फाटि गेल। आहाँ कोनो चिन्ता नहि करू। *(नेताजी सँ)* आहाँ सबहक भ्रम टूटल। देखलियै ? केहन सम्बन्ध छै दुनू गोटा मे ? आहाँ सबहक छल आब स्पष्ट बुझलौं।

मनटुन– अपना के बचाबऽ लेल ई दूनू गोटा नाटक करैयाए।

नेताजी– ई फोटो झूठ नहि छै।

सोमेन– आहाँ आदेश दिअ ने नेताजी। की करक छै ?

घूरन– आहाँ सब नहिये मानबै। अभिषेक ! हमर लाठी नेने आ। देखै छियै हमहूँ।

अभिषेक– हम लाएल छी बाबूजी।

(मंदिरक पाँछा सँ लाठी आनि दैत अछि।) हे लिअ।

घूरन– *(शोभा आ दीपक लग मे)* आब देखै छियै ककर मजाल छै हमरा पुतोहु दिश देखत। कपार भाँगि देबै।

वीजेन्द्र– नेताजी! माय बहिनक सम्बन्ध के खराब दृष्टि सँ नहि देखल जा सकै छै। आहाँक आरोप मिथ्या साबित भेल। संगहि आहाँ सबहक चरित्र सेहो उजागर भेल।

नेताजी– किए यौ ? हमरा लग प्रमाण अछि। ई फोटो । एकरा बाद गवाह सेहो अछि। गवाही देत।

(शिखरदेव आ भजेन्द्रक प्रवेश)

शिखर– आहाँक गवाह उनटि गेल नेता जी। –बात जानी साफ – साफ।

नेताजी– के ? शिखरदेव बाबू ?

शिखर– हँ ! हम पटना सँ दौड़ल आबि रहल छी। पता लागल जे आहाँ अनकर फैसला कऽ रहल छी। पटना मे आहाँक फैसला भऽ भेल। –बात जानी साफ – साफ।

नेताजी– से तऽ वकील सँ गप्प भेल रहए। फाइनल हियरिंग रहै। फैसला हमरे पक्ष मे भेल हएत। अइ विषय मे गाम पर गप्प करब। एखन एतऽ बड़ गम्भीर फैसला अछि।

शिखर– औजी, दलान पर आब हम नहि जाएब ओ अहुँ कें नहि गेल हएत। आहाँ केश हारि गेलहुँ। भुजनी बलात्कार काण्डक केश मे कोर्ट आहाँ के पकड़बाक आदेश देलक। पुलिस सेहो आबिये रहल अछि। –बात जानी साफ –साफ।

(नेताजीक ठोर पर फुफरी छनि।)

भजेन्द्र– *(मुस्कराइत)* एतेक घबराउ नहि। ई सब अहिना होइत छैक। ''बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोइ, जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा ना कोइ।'' सुनलहुँ नेताजी के किरदानी।

वीजेन्द्र– मुखियाजी! हमरा सबके विश्वास नहि होइ छल जे नेताजी एहनो काज कऽ सकैत छथि। घूरन काका बड़ पैघ अन्याय भेल आहाँ संग। पकड़ू नेताजी के सुना दियौन पंचायतक फैसला। आब ई रस्सा नेताजी कें अपने काज एलनि।

शिखर– सुनु-सुनु। एतबे नहि। एकटा बात आरो जे घूरन काकाक पुतोहु संगे जे घटिया वर्ताव कएल गेलए ताहि बारे मे चुपचाप गुप्त सूचना महिला अयोग के किओ फोन सँ दऽ देलकए। ओकर अध्यक्षा शिमला देबी पुलिस के पठा रहल छथि। ओहू मे नेताजी अहींक नाम प्रमुख अछि। बुझलौं। –बात जानी साफ – साफ।

वीजेन्द्र – बापरे बाप! ई मनक्खरूप मे शैतान छी। ककरा पर विश्वास कएल जाएत।

शिखर– मनटुनबाबू! अइ नेताजीक संग ? घटिया राजनीतिक खातिर सऽर कुटुम्ब, समाज सबटा दाव पर लगा दैछ। छी! छी! यौ हमर बात बुझलियै। – बात जानी साफ –साफ।

(इन्सपेक्टरक प्रवेश करैत अछि। सोमेन भागि जाइत अछि)

इन्सपेक्टर– नमस्कार मुखियाजी!

भजेन्द्र– नमस्कार!

इन्सपेक्टर – यहाँ पर गोवर्द्धन नेताजी कौन हैं ?

नेताजी– हम भेलहुँ सर। *(डेराइत)*

इन्सपेक्टर– *(कागज देखबैत)* आपके नाम का दो गिरफ्तारी वॉरन्ट। एक मे आप बलात्कारी हैं और दूसरे मे महिला आयोग का आरोप है कि समाज मे महिला पर हो रहे शोषण, अत्याचार मे आप सक्रिय रूप से प्रमुख अगुआ हैं। यहाँ मनटुन-----

मनटुन– हम छी साहेब।

इन्सपेक्टर– आपके नाम से भी गिरफ्तारी का वारंट है और एक सोमेन नाम से भी है।

शिखर– औजी इन्सपेक्टर साहेब! हम बात जानी साफ साफ। पहिने बजबे नहि केलौं। सोमेन तऽ आहाँ के देखिते भागि गेल।

इन्सपेक्टर– मुखियाजी, घूरनबाबू, दीपक एवं शोभा! आपलोगों को प्रशासन की तरफ से सुरक्षा दी जायगी। जब भी जरूरत हो सरकार से सहायता उपलब्ध करा सकते हैं।

(नेताजी आ मनटुन के गिरफ्तार करै छथि।)

घूरन– अन्याय के फल नीक कहियो नहि भेलैयाए। आहाँ एतेक नीच भऽ सकै छी। आब चक्की पीसैत रहू।

दीपक- एकरे कहै छै – अनका पर ढेप तऽ अपना पर पाथर।

भजेन्द्र- देखलियै नेताजी। भजेन्द्रक बुद्धि। सौ सोनार के एक लोहार के। तहन एकटा सबक हमहूँ लैछी। आइ दिन सँ हम अपन बलक प्रयोग नीक कार्य मे लगायब।

अभिषेक- *(इन्सपेक्टर लग आबि)* इन्सपेक्टर साहेब हिनका हाथ मे लोहाक मठ्ठा पहिरा देलियनि। हमरा मुरन मे चानी के भेटल रहय। *(सब हँसैत अछि।)*

(नेताजी, मनटुन, इन्सपेक्टरक प्रस्थान)

दीपक- हमरा पर विश्वास भेल किने बाबूजी।

(भजेन्द्र दीपक कें छाती सँ लगा लै छथि।)

शोभा- *(घूरन लग)* हमरा आशीर्वाद दिअ बाबूजी।

कौशल्या- *(आरती नेने मन्दिर जाइत अछि। पुनः लग मे आबि जाइत अछि।)*

भजेन्द्र- हमरा आहाँ दूनू गोटा पर गर्व अछि।

कौशल्या- *(शोभाक आ अभिषेक दीपक के मुँह मे प्रसाद खुअबैत अछि।)*

भजेन्द्र- हमहुँ अपना पापक प्रायश्चित्त करबाक हेतु हरिद्वार सँ भऽ अबै छी।

शिखर- मुखियाजी! हमरो नेने चलू। हम बात जानी साफ-साफ। आहाँ सभहक आशीर्वाद सँ हमहुँ बड़ झूठ-फुस बाजल छी। हम बात जानी साफ-साफ।

वीजेन्द्र- एकटा घोषणा हमहुँ करै छी। जौं आहाँ सब अनुमति दी तऽ शोभा सँ विवाह करबाक हेतु हम प्रस्तुत छी।

(शोभा वीजेन्द्र दिश आर लोक दूनू गोटे दिश तकैत रहि जाइ छथि)

***** समाप्त *****





बायाँ सँ – घूरन, वीजेन्द्र, अभिषेक, शोभा, दीपक, भजेन्द्र, नेताजी, मनटुन, सोमेन आ शिखर



महाजातिसदन प्रेक्षागृहक दर्शकवृन्द

पत्राचारक पता

आनन्द कुमार झा
13/16-B विशेश्वर बनर्जी लेन,
कदमतल्ला, हावड़ा– 711101

पोथी प्राप्त करबाक पता

आर. के. स्टेशनरी
शर्मा मार्केट
सेक्टर - 5, नोयडा
फोन : 91-4538541

श्री शारदानन्द झा
J- 259, अर्पण विहार
जौतपुर, नई दिल्ली - 44

श्री अभयकान्त झा
बैंक ऑफ बड़ौदा
4, ब्रेबर्न रोड, कोलकाता - 1

श्री अमरेन्द्र कुमार झा
ग्राम+पो०– मेंहथ (दक्षिणबाड़ी टोल)
झंझारपुर, मधुबनी

मिथिला बुक्स एण्ड स्टेशनरी
अनुमंडल रोड, झंझारपुर
एल. एन. जे. कॉलेजक समक्ष

नवीन प्रकाशन
9-B, सिकदर पाड़ा स्ट्रीट,
कोलकाता–7
✆ - 238-4201

दिल्ली प्रदेश नवशक्ति मैथिली मंच (रजि.)
95 A, अग्रनगर, प्रेमनगर– III, नई दिल्ली – 41
✆ 518-5702